

UP Board Class 12 General Hindi 2026 (Set 302 BM) Question Paper with Solutions



General Instructions

- (i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.
- (ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.
- (iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). शुक्लोत्तरयुगीन लेखक हैं:

- (A) गुलाबराय
- (B) रायकृष्ण दास
- (C) धर्मवीर भारती
- (D) पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी

Correct Answer: (C) धर्मवीर भारती

Solution:

चरण 1: काल-विभाजन को समझें:

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद का समय शुक्लोत्तर युग कहलाता है। इस युग के लेखक शुक्ल जी के बाद उभरे और नए विषयों तथा नई शैलियों में लिखा।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) गुलाबराय: ये शुक्ल-युग के निबन्धकार हैं, इसलिए शुक्लोत्तर नहीं हैं।
- (B) रायकृष्ण दास: ये भारतेन्दु के बाद और प्रसाद-युग में लिखने वाले गद्य-काव्यकार हैं।

- (C) धर्मवीर भारती: ये शुक्ल जी के बाद के लेखक हैं। इनकी रचनाएँ 'गुनाहों का देवता', 'अन्धा युग', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' हैं।
- (D) पद्मलाल पुत्रालाल बख्शी: ये द्विवेदी और शुक्ल युग के निबन्धकार हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) धर्मवीर भारती।

1(b). हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है:

- (A) 'धरती के फूल'
- (B) 'पुनर्नवा'
- (C) 'भारत की एकता'
- (D) 'भाग्य और पुरुषार्थ'

Correct Answer: (B) 'पुनर्नवा'

Solution:

चरण 1: रचनाकार की पहचान:

हजारीप्रसाद द्विवेदी शुक्लोत्तर युग के प्रमुख निबन्धकार, उपन्यासकार और आलोचक हैं। उनके उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा' हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) 'धरती के फूल': यह द्विवेदी जी की रचना नहीं है।
- (B) 'पुनर्नवा': यह उनका 1973 में प्रकाशित उपन्यास है। यही सही है।
- (C) 'भारत की एकता': यह द्विवेदी जी की कृति नहीं है।
- (D) 'भाग्य और पुरुषार्थ': यह भी उनकी रचना नहीं है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) 'पुनर्नवा'।

1(c). 'दीप जले-शंख बजे' रचना की विधा है:

- (A) आत्मकथा
- (B) जीवनी
- (C) रेखाचित्र
- (D) संस्मरण

Correct Answer: (D) संस्मरण

Solution:

चरण 1: रचना और रचनाकार:

'दीप जले शंख बजे' कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की कृति है। इसमें लेखक ने अपने अनुभव में आए लोगों और घटनाओं को स्मृति के आधार पर लिखा है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) आत्मकथा: इसमें लेखक अपने पूरे जीवन की कथा कहता है। यह कृति ऐसी नहीं है।
- (B) जीवनी: इसमें किसी दूसरे व्यक्ति का जीवन-वृत्त होता है। यह भी नहीं है।
- (C) रेखाचित्र: 'माटी हो गई सोना' और 'जिन्दगी मुस्कराई' प्रभाकर जी के रेखाचित्र हैं।
- (D) संस्मरण: स्मृति के आधार पर लिखी गई रचना संस्मरण है। 'दीप जले शंख बजे' और 'भूले-बिसरे चेहरे' उनके संस्मरण हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (D) संस्मरण।

1(d). 'तट की खोज' कृति के रचनाकार हैं:

- (A) हरिशंकर परसाई
- (B) जैनेन्द्रकुमार
- (C) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
- (D) वियोगी हरि

Correct Answer: (A) हरिशंकर परसाई

Solution:

चरण 1: कृति की पहचान:

‘तट की खोज’ हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना है। परसाई जी ने समाज और राजनीति की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य लिखा।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) हरिशंकर परसाई: ‘तट की खोज’ के रचनाकार यही हैं। अन्य कृतियाँ ‘विकलांग श्रद्धा का दौर’, ‘वैष्णव की फिसलन’, ‘ठिठुरता हुआ गणतन्त्र’ हैं।
- (B) जैनेन्द्रकुमार: ये ‘सुनीता’, ‘त्यागपत्र’ और ‘परख’ जैसे उपन्यासों के लेखक हैं।
- (C) कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर’: ये संस्मरण और रेखाचित्र के लेखक हैं।
- (D) वियोगी हरि: ये ‘वीर सतसई’ और ‘प्रेम शतक’ जैसी काव्य-कृतियों के रचयिता हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) हरिशंकर परसाई।

1(e). 'आधुनिक हिन्दी एकांकी का जनक' माना जाता है:

- (A) सेठ गोविन्ददास को
- (B) लक्ष्मीनारायण मिश्र को
- (C) डॉ. राम कुमार वर्मा को
- (D) उदय शंकर भट्ट को

Correct Answer: (C) डॉ. राम कुमार वर्मा को

Solution:

चरण 1: एकांकी का इतिहास:

हिन्दी में आधुनिक एकांकी का आरम्भ डॉ. रामकुमार वर्मा से माना जाता है। उनकी 'बादल की मृत्यु' (1930) को पहला सफल एकांकी माना जाता है। इसी कारण उन्हें आधुनिक हिन्दी एकांकी का जनक कहते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) सेठ गोविन्ददास: ये मुख्य रूप से नाटककार हैं।
- (B) लक्ष्मीनारायण मिश्र: ये समस्या-नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- (C) डॉ. रामकुमार वर्मा: इनके एकांकी 'चारुमित्रा', 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई' प्रसिद्ध हैं। यही सही है।
- (D) उदयशंकर भट्ट: ये भी नाटक और एकांकी लिखते थे, पर जनक नहीं माने जाते।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) डॉ. रामकुमार वर्मा को।

2(a). 'जागरण सुधार काल' कहा जाता है:

- (A) प्रयोगवाद युग को
- (B) भारतेन्दु-युग को
- (C) छायावाद युग को
- (D) द्विवेदी-युग को

Correct Answer: (D) द्विवेदी-युग को

Solution:

चरण 1: काल-विभाजन:

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रचलित विभाजन में भारतेन्दु-युग को पुनर्जागरण काल और द्विवेदी-युग को जागरण-सुधार काल कहा जाता है। द्विवेदी-युग का समय लगभग 1900 से 1918 ई. है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) प्रयोगवाद युग: यह 1943 के बाद की नयी कविता की प्रारम्भिक धारा है।
- (B) भारतेन्दु-युग: इसे पुनर्जागरण काल कहते हैं।
- (C) छायावाद युग: इसे कल्पना और रहस्य-भावना का काल कहा जाता है।
- (D) द्विवेदी-युग: महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से भाषा-सुधार और समाज-सुधार का काम किया। इसीलिए यह जागरण-सुधार काल है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (D) द्विवेदी-युग को।

2(b). बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा रचित कविताओं का शीर्षक है:

- (A) 'महापर्व'
- (B) 'भारत बारहमासा'
- (C) 'आनन्द अरुणोदय'
- (D) 'विजयिनी विजय वैजन्ती'

Correct Answer: (C) 'आनन्द अरुणोदय'

Solution:

चरण 1: प्रेमघन का परिचय:

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' भारतेन्दु-युग के कवि, निबन्धकार और नाटककार थे।

उन्होंने 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका निकाली। रामचन्द्र शुक्ल ने उनकी काव्य-रचनाओं में 'आनन्द अरुणोदय' का उल्लेख किया है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) 'महापर्व': यह प्रेमघन की काव्य-कृति के रूप में प्रसिद्ध नहीं है।
- (B) 'भारत बारहमासा': यह भी प्रेमघन की प्रमुख रचना नहीं मानी जाती।
- (C) 'आनन्द अरुणोदय': यह प्रेमघन की काव्य-रचना है। यही सही है।
- (D) 'विजयिनी विजय वैजन्ती': यह प्रेमघन की रचना नहीं है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) 'आनन्द अरुणोदय'।

2(c). 'दीपशिखा' काव्य कृति है:

- (A) सुमित्रानन्दन पन्त की
- (B) महादेवी वर्मा की
- (C) नरेन्द्र शर्मा की
- (D) भगवतीचरण वर्मा की

Correct Answer: (B) महादेवी वर्मा की

Solution:

चरण 1: कृति की पहचान:

'दीपशिखा' महादेवी वर्मा का प्रसिद्ध गीत-संग्रह है। इसमें वेदना, करुणा और आध्यात्मिक भावना के गीत हैं। इसके लिए दीपक और उसकी लौ का प्रतीक बार-बार आता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:

- (A) सुमित्रानन्दन पन्त: इनकी कृतियाँ 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त', 'ग्राम्या' हैं।
- (B) महादेवी वर्मा: इनके संग्रह 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'साम्ब्यगीत' और

‘दीपशिखा’ हैं। यही सही है।

(C) नरेन्द्र शर्मा: इनकी कृतियाँ ‘प्रवासी के गीत’ और ‘पलाश वन’ हैं।

(D) भगवतीचरण वर्मा: इनकी कृतियाँ ‘मधुकण’ और ‘चित्रलेखा’ हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) महादेवी वर्मा की।

2(d). 'हरी घास पर क्षण भर' काव्यकृति के रचयिता हैं:

(A) 'अज्ञेय'

(B) गिरिजाकुमार माथुर

(C) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(D) भवानी प्रसाद मिश्र

Correct Answer: (A) 'अज्ञेय'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में 'हरी घास पर क्षण भर' नामक काव्य-संग्रह के रचयिता का नाम पूछा गया है।

चरण 2: सही तथ्य:

'हरी घास पर क्षण भर' (1949) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की प्रसिद्ध काव्यकृति है। अज्ञेय प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं। इस संग्रह की कविताओं में नई भाषा, नए बिम्ब और नई अनुभूति दिखाई देती है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:

(B) गिरिजाकुमार माथुर की प्रमुख कृतियाँ 'मंजीर', 'नाश और निर्माण' और 'धूप के धान' हैं।

(C) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कृतियाँ 'काठ की घंटियाँ' और 'खूँटियों पर टँगे लोग' हैं।

(D) भवानी प्रसाद मिश्र की कृतियाँ 'गीतफरोश' और 'सन्नाटा' हैं।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (A) 'अज्ञेय' है।

2(e). मैथिलीशरण गुप्त की रचना है:

- (A) 'चित्राधार'
- (B) 'अणिमा'
- (C) 'यशोधरा'
- (D) 'उच्छ्वास'

Correct Answer: (C) 'यशोधरा'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

चारों विकल्पों में से वह रचना चुननी है जो मैथिलीशरण गुप्त की है।

चरण 2: सही तथ्य:

'यशोधरा' मैथिलीशरण गुप्त का चम्पू-काव्य है। इसमें गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा की विरह-वेदना और त्याग का वर्णन है। इसी काव्य में प्रसिद्ध पंक्ति है: अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:

- (A) 'चित्राधार' जयशंकर प्रसाद की रचना है।
- (B) 'अणिमा' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना है।
- (D) 'उच्छ्वास' सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) 'यशोधरा' है।



3(i). गद्यांश: निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की रिसपेक्टेबिलिटी (प्रतिष्ठा) ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य-कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने-समझाने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में गद्यांश के लेखक का नाम और जिस पाठ से यह अंश लिया गया है, उसका नाम पूछा गया है।

चरण 2: पहचान:

यह गद्यांश हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना 'निन्दा रस' से लिया गया है।

इस पाठ में लेखक ने निन्दा करने की आदत पर हल्का और तीखा व्यंग्य किया है।

अंतिम उत्तर:

लेखक: हरिशंकर परसाई। पाठ का नाम: निन्दा रस।

3(ii). गद्यांश: निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की रिसपेक्टेबिलिटी (प्रतिष्ठा) ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य-कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने-समझाने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के व्यंग्य निबन्ध 'निन्दा रस' से लिया गया है। इसमें लेखक ने निन्दा करने वालों की मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया है।

चरण 2: प्रसंग:

निबन्ध में लेखक ने निन्दा के कई रूप बताए हैं। इन पंक्तियों में वह उन लोगों का चित्र खींचता है जिनके लिए दूसरों की बुराई करना ही जीवन का सबसे बड़ा सहारा बन जाता है।

चरण 3: शब्दार्थ:

पूँजी: जमा धन, जिसके बल पर काम चलता है।

रिसपेक्टेबिलिटी: प्रतिष्ठा, समाज में मान-सम्मान।

कलंक-कथा: किसी के दोष या बदनामी की कहानी।

पारायण: बार-बार पढ़ना या दोहराना।

चरण 4: व्याख्या:

लेखक कहते हैं कि कुछ लोगों के पास निन्दा ही सबसे बड़ी पूँजी होती है। जैसे व्यापारी पूँजी लगाकर अपना कारोबार बढ़ाता है, वैसे ही ये लोग निन्दा के सहारे अपना बड़ा-सा व्यापार चलाते हैं। वे जगह-जगह बैठकर दूसरों की बुराइयाँ सुनाते रहते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं जिनकी समाज में इज्जत इसी पर टिकी होती है कि वे

दूसरों के कलंकों की चर्चा बार-बार करते हैं। वे दूसरों को नीचा दिखाकर स्वयं को ऊँचा और चरित्रवान सिद्ध करना चाहते हैं। यह कितनी विचित्र बात है कि जिस काम से उनकी अपनी ओछी सोच झलकती है, उसी को वे अपनी शान समझते हैं।

निष्कर्ष:

इस अंश में परसाई जी ने निन्दकों की खोखली प्रतिष्ठा और दोहरे चरित्र पर करारा व्यंग्य किया है। व्यापार और पूँजी जैसे शब्दों से निन्दा को एक धन्धे के रूप में दिखाना इसकी विशेषता है।

3(iii). गद्यांश: निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की रिसपेक्टेबिलिटी (प्रतिष्ठा) ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य-कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने-समझाने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

(iii) निन्दा किसकी पूँजी होती है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से खोजें:

गद्यांश की पहली पंक्ति में ही लिखा है कि निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है।

चरण 2: स्पष्टीकरण:

यहाँ 'कुछ लोगों' से वे लोग मतलब हैं जो हर समय दूसरों की बुराई करते रहते हैं। उनके पास कोई और गुण या सहारा नहीं होता। इसलिए निन्दा ही उनका धन है और उसी से वे अपना व्यापार चलाते हैं।

अंतिम उत्तर:

निन्दा उन कुछ लोगों की पूँजी होती है जो दूसरों की बुराई करके अपनी प्रतिष्ठा बनाना चाहते हैं।

3(iv). गद्यांश: निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की रिसपेक्टेबिलिटी (प्रतिष्ठा) ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य-कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने-समझाने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

(iv) 'सत्य-कल्पित कलंक-कथा' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्दों को अलग करें:

‘सत्य-कल्पित’ का अर्थ है कुछ बात सच और कुछ अपनी कल्पना से गढ़ी हुई।
‘कलंक-कथा’ का अर्थ है किसी की बदनामी की कहानी।

चरण 2: अर्थ:

निन्दक जब किसी की बुराई सुनाता है, तो उसमें थोड़ा सच होता है और बाकी अपनी ओर से जोड़ी हुई बातें होती हैं। इस तरह सच और कल्पना मिली हुई बदनामी की कथा ‘सत्य-कल्पित कलंक-कथा’ कहलाती है।

अंतिम उत्तर:

सत्य-कल्पित कलंक-कथा का अर्थ है ऐसी बदनामी की कहानी, जो कुछ सच्ची और कुछ मनगढ़ंत होती है।

3(v). गद्यांश: निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की रिसपेक्टेबिलिटी (प्रतिष्ठा) ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य-कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने-समझाने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

(v) कुछ लोगों की प्रतिष्ठा का आधार क्या होता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से उत्तर:

गद्यांश के अनुसार कई लोगों की रिसपेक्टेबिलिटी, यानी प्रतिष्ठा, दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है।

चरण 2: भाव:

वे दूसरों की बदनामी की बातें बार-बार सुनाते हैं। इसी से वे अपने को श्रेष्ठ और संत जैसा दिखाकर मान पाना चाहते हैं।

अंतिम उत्तर:

कुछ लोगों की प्रतिष्ठा का आधार दूसरों की कलंक-कथाओं यानी निन्दा का बार-बार वर्णन करना होता है।

OR

3(i). *गद्यांश:* यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड से लिया गया है। इसमें लेखक ने अपने एक अनुभव का वर्णन किया है।

चरण 2: प्रसंग:

लेखक वहाँ की बूढ़ी स्त्रियों को देखकर आश्चर्य में पड़ जाता है। उसे लगता है कि उनकी आयु जितनी बढ़ती है, उनके चेहरे की मुसकान उतनी ही खिलती है।

चरण 3: गद्यांश की विषय-वस्तु:

गद्यांश में बताया गया है कि वहाँ की वृद्ध स्त्रियाँ जितनी अधिक आयु की हैं, उतनी ही अधिक प्रसन्न और मुसकराती हुई दिखाई देती हैं। लेखक इस प्रसन्नता का कारण जागरूक, सेवामय और लक्ष्य के प्रति समर्पित जीवन को मानता है।

अंतिम उत्तर:

यह अंश पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड से लिया गया है और सार्थक तथा सेवा-भरे जीवन से मिलने वाली प्रसन्नता का वर्णन करता है।

3(ii). गद्यांश: यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संदर्भ:

यह अंश एक हिन्दी गद्य-पाठ का है। इसमें लेखक वृद्ध स्त्रियों की प्रसन्नता के रहस्य को बताता है।

चरण 2: शब्दार्थ:

जोत = ज्योति, प्रकाश। जागरूक = सावधान, सचेत। लक्ष्यदर्शी = उद्देश्य को सामने रखने वाला। सेवा-निरत = सेवा में लगा हुआ। एकाग्र = एक ही ओर मन लगाने वाला।

चरण 3: व्याख्या:

लेखक प्रश्न करता है कि बुढ़ापे में भी चेहरों पर जो चमक और मुसकान है, वह किस दीपक का प्रकाश है। फिर वह स्वयं उत्तर देता है कि यह प्रकाश जागरूक जीवन का है, ऊँचे लक्ष्य पर दृष्टि रखने वाले जीवन का है, सेवा में लगे जीवन का है और अपने

विश्वासों पर टिके जीवन का है। ऐसे लोगों को आयु का बोझ नहीं दबाता। उनके भीतर का उत्साह बना रहता है।

लेखक आगे कहता है कि भाषाओं के भेद पहले भी थे और आगे भी रहेंगे, पर यह जीवन-ज्योति सब भेदों से ऊपर है। यह पूरी दुनिया की सबसे श्रेष्ठ ज्योति है।

चरण 4: विशेष:

भाषा सरल और भावपूर्ण है। प्रश्नों और विस्मयादिबोधक वाक्यों से कथन प्रभावशाली बना है।

निष्कर्ष:

अर्थपूर्ण और सेवामय जीवन ही मनुष्य को बुढ़ापे में भी प्रसन्न रखता है।

3(iii). गद्यांश: यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(iii) गद्यांश का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

गद्यांश का उद्देश्य वह मुख्य बात है जो लेखक पाठक को समझाना चाहता है।

चरण 2: उद्देश्य:

लेखक का उद्देश्य यह दिखाना है कि बुढ़ापे की प्रसन्नता का आधार धन या सुविधा नहीं है। इसका आधार जागरूक, लक्ष्य वाला और सेवा में लगा जीवन है।

वह यह भी बताना चाहता है कि भाषाओं के भेद के बाद भी यह जीवन-ज्योति सब मनुष्यों के लिए समान है।

चरण 3: पाठक के लिए सन्देश:

हमें अपने जीवन को सेवा और उद्देश्य से भरना चाहिए। तब आयु बढ़ने पर भी मन में उत्साह बना रहेगा।

निष्कर्ष:

गद्यांश का उद्देश्य सेवामय और उद्देश्यपूर्ण जीवन की महत्ता को बताना है।

3(iv). गद्यांश: यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(iv) कौनसी ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश के आधार पर उत्तर:

गद्यांश के अनुसार विश्व की सर्वोत्तम ज्योति वह है जो जागरूक जीवन की है, लक्ष्य पर दृष्टि रखने वाले जीवन की है, सेवा में लगे जीवन की है और अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की है।

चरण 2: प्रमाण:

लेखक ने कहा है कि भाषा के भेद रहे हैं और रहेंगे, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

अंतिम उत्तर:

जागरूक, लक्ष्यदर्शी, सेवा-निरत और एकाग्र जीवन की ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है।

3(v). गद्यांश: यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

(v) लेखक ने किसके मुसकानमय जीवन का चित्रण किया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से उत्तर:

गद्यांश के पहले वाक्य में लिखा है कि यहाँ जो जितनी बूढ़ी है, वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल मुसकानमयी है।

चरण 2: निष्कर्ष:

अतः लेखक ने वृद्ध स्त्रियों के मुसकानमय और प्रसन्न जीवन का चित्रण किया है।

अंतिम उत्तर:

बूढ़ी स्त्रियों का मुसकानमय जीवन।

4(i). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाए हैं जिसमें सुख गात।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: संदर्भ:

प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा-मनु' प्रसंग से लिया गया है। यह अंश हमारी पाठ्यपुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित है।

चरण 2: कवि परिचय:

जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख स्तम्भ हैं। 'कामायनी' उनकी सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति है, जिसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव-जीवन की कथा कही गई है।

अंतिम उत्तर:

सन्दर्भ: पाठ 'श्रद्धा-मनु', कवि जयशंकर प्रसाद, ग्रन्थ 'कामायनी'।

4(ii). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाए हैं जिसमें सुख गात।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:

रजनी = रात। पिछली रजनी = रात का अन्तिम भाग। नवल = नया। प्रभात = सवेरा, सुबह।

चरण 2: भावार्थ:

श्रद्धा निराश मनु को समझाती है कि दुःख की काली रात के अन्तिम पहर में ही सुख का नया सवेरा जन्म लेता है। जैसे रात बीतने पर सूर्योदय होता है, वैसे ही दुःख का समय पूरा होते ही सुख का उजाला फैलता है। इसलिए दुःख से घबराना उचित नहीं है।

चरण 3: विशेष:

यहाँ दुःख की तुलना रात से और सुख की तुलना प्रभात से की गई है। कवि ने आशावादी दृष्टि दी है कि हर कठिन समय के पीछे सुख छिपा होता है। भाषा तत्सम-प्रधान और भाव-प्रवण है।

4(iii). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाए हैं जिसमें सुख गात।

(iii) श्रद्धा किसके हताश मन को प्रेरणा दे रही है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: उत्तर:

श्रद्धा मनु के हताश मन को प्रेरणा दे रही है। जलप्रलय में सब कुछ नष्ट हो जाने से मनु निराश और चिन्तित हैं। श्रद्धा उन्हें समझाती है कि दुःख के बाद सुख अवश्य आता है, इसलिए उन्हें साहस के साथ कर्म में लगना चाहिए।

अंतिम उत्तर:

श्रद्धा 'कामायनी' के नायक मनु को प्रेरणा दे रही है।

4(iv). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाए हैं जिसमें सुख गात।

(iv) 'एक परदा यह झीना नील' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अलंकार का नाम:

‘एक परदा यह झीना नील’ पंक्ति में रूपक अलंकार है।

चरण 2: कारण:

रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप होता है। यहाँ दुःख को झीने नीले परदे के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके पीछे सुख का शरीर छिपा है। उपमेय (दुःख) और उपमान (परदा) में कोई भेद नहीं रखा गया, इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है।

अंतिम उत्तर:

रूपक अलंकार।

4(v). पद्यांश: दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात;

एक परदा यह झीना नील

छिपाए हैं जिसमें सुख गात।

(v) 'गात' एवं 'रजनी' शब्द का अर्थ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:**चरण 1: शब्दों के अर्थ:**

गात = शरीर, देह।

रजनी = रात, रात्रि।

चरण 2: पद्यांश में प्रयोग:

‘सुख गात’ का अर्थ है सुख का शरीर, जो दुःख रूपी परदे के पीछे छिपा है। ‘रजनी’ यहाँ दुःख की रात के लिए आया है।

अंतिम उत्तर:

गात का अर्थ शरीर और रजनी का अर्थ रात है।

OR

4(i). पद्यांश: सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।

हो चुका है सिद्ध, है तू अभी शिशु नादान;
फूल-काँटों की तुझे, कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'काव्यांजलि' के 'अभिनव मनुष्य' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

चरण 2: प्रसंग:

इन पंक्तियों में कवि आधुनिक मनुष्य को विज्ञान की शक्ति का सोच-समझकर प्रयोग करने की चेतावनी देता है। कवि का मत है कि मनुष्य के पास शक्ति तो बहुत है, पर उसे सँभालने की समझ अभी कम है।

अंतिम उत्तर:

सन्दर्भ: पाठ 'अभिनव मनुष्य', कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'।

4(ii). पद्यांश: सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।

हो चुका है सिद्ध, है तू अभी शिशु नादान;
फूल-काँटों की तुझे, कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्दार्थ:

सावधान: सचेत, चौकन्ना। तजकर: छोड़कर। मोह: लगाव। स्मृति के पार: याद से भी दूर, अर्थात् पूरी तरह भुलाकर।

चरण 2: भावार्थ:

कवि मनुष्य को पुकारकर कहता है कि सावधान हो जा। यदि विज्ञान तेरे हाथ में तलवार की तरह है, तो उसके मोह में मत पड़। उसे इतनी दूर फेंक दे कि उसकी याद तक न रहे। तलवार जैसे बिना अभ्यास के अपना ही अंग काट देती है, वैसे ही अनियंत्रित विज्ञान मानव का ही विनाश कर सकता है।

चरण 3: टिप्पणी:

यहाँ कवि विज्ञान का विरोधी नहीं है। वह केवल यह चाहता है कि मनुष्य विज्ञान का प्रयोग विनाश के लिए न करे।

निष्कर्ष:

रेखांकित पंक्तियों का आशय है कि विवेक के बिना विज्ञान की शक्ति घातक है।

4(iii). पद्यांश: सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू अभी शिशु नादान;
फूल-काँटों की तुझे, कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

(iii) कवि ने वैज्ञानिक युग के मानव को क्या चेतावनी दी है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में पूछा गया है कि कवि ने वैज्ञानिक युग के मानव को कौन-सी चेतावनी दी है।
उत्तर पद्यांश से ही देना है।

चरण 2: उत्तर:

कवि ने चेतावनी दी है कि विज्ञान तलवार के समान है। मनुष्य अभी नादान बच्चे जैसा है और उसे फूल तथा काँटे की पहचान नहीं है। यदि वह इस तलवार से खेलेगा, तो अपने ही अंग काट लेगा। इसलिए उसे विज्ञान का प्रयोग विनाश के लिए नहीं करना चाहिए, वरना विज्ञान उसी के लिए घातक बन जाएगा।

अंतिम उत्तर:

चेतावनी यह है कि विज्ञान का दुरुपयोग मानव के अपने विनाश का कारण बनेगा।

4(iv). पद्यांश: सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू अभी शिशु नादान;
फूल-काँटों की तुझे, कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

(iv) कवि ने तलवार किसे बताया है और इसका प्रयोग करने से मनुष्य को क्यों रोका है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: तलवार किसे कहा गया है:

कवि ने विज्ञान को तलवार बताया है। पद्यांश की पहली पंक्ति में ही लिखा है कि यदि विज्ञान तलवार है।

चरण 2: मनुष्य को क्यों रोका है:

कवि के अनुसार मनुष्य अभी शिशु के समान नादान है। वह फूल और काँटे का भेद नहीं जानता, अर्थात् उचित और अनुचित नहीं पहचानता। तलवार की धार बहुत तीखी है, इसलिए उससे खेलने पर वह अपने ही अंग काट लेगा। इसी विनाश से बचाने के लिए कवि ने उसे इसका प्रयोग करने से रोका है।

अंतिम उत्तर:

तलवार विज्ञान को कहा गया है, और उसके विनाशकारी दुरुपयोग से बचाने के लिए मनुष्य को रोका गया है।

**4(v). पद्यांश: सावधान, मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तज कर मोह, स्मृति के पार।**

हो चुका है सिद्ध, है तू अभी शिशु नादान;
फूल-काँटों की तुझे, कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।

(v) प्रस्तुत पद्यांश में प्रयुक्त रस एवं अलंकार का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रस:

इस पद्यांश में शान्त रस है। कवि मनुष्य को सांसारिक मोह और विनाशकारी प्रवृत्ति छोड़कर सही राह पर चलने की सीख देता है, जिससे मन में उपदेश और विवेक का भाव जागता है।

चरण 2: अलंकार:

यहाँ रूपक अलंकार है। 'विज्ञान है तलवार' में उपमेय विज्ञान पर उपमान तलवार का अभेद आरोप किया गया है। इसके अतिरिक्त 'तो, तज, तलवार' जैसे शब्दों में 'त' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार भी है।

निष्कर्ष:

रस: शान्त रस। अलंकार: रूपक और अनुप्रास।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

Correct Answer: —

Solution:**चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):**

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 को देवबन्द (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार थे। रेखाचित्र, संस्मरण, लघुकथा और रिपोर्टाज उनकी प्रिय विधाएँ हैं। भाषा सरल, भावपूर्ण और चित्रात्मक है। 1990 में उन्हें पद्मश्री मिला। 1995 में निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:

ज़िन्दगी मुस्कराई, बाजे पायलिया के घुँघरू, माटी हो गई सोना, दीप जले शंख बजे, आकाश के तारे धरती के फूल, महके आँगन चहके द्वार।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):

1. उन्होंने 'ज्ञानोदय', 'नया जीवन' और 'विकास' पत्रिकाओं का सम्पादन किया।
2. हिन्दी में रिपोर्ताज विधा को स्थापित करने वाले लेखकों में उनका नाम प्रमुख है।
3. उनका मानना था कि साहित्य का काम केवल मनोरंजन नहीं, समाज को ऊँचा उठाना भी है।
4. अन्य कृतियाँ: क्षण बोले कण मुस्काए, भूले-बिसरे चेहरे, तपती पगडण्डियों पर पदयात्रा।

निष्कर्ष:

प्रभाकर जी संस्मरण, रेखाचित्र और लघुकथा के सफल लेखक थे। उनकी रचनाओं में देशप्रेम और मानवीय संवेदना दिखाई देती है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):

प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी का जन्म 1919 ई. में आन्ध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले में हुआ। वे श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। वे हिन्दी और तेलुगु के तुलनात्मक अध्ययन के प्रमुख विद्वान थे। उनकी भाषा शुद्ध, तत्सम शब्दों से युक्त और शैली विचारात्मक है।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:

वैचारिकी, शोध और बोध, मेरे विचार, साहित्य और समाज, हिन्दी और तेलुगु: एक तुलनात्मक अध्ययन, दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):

1. उन्होंने दक्षिण और उत्तर भारत के साहित्य को जोड़ने का काम किया।
2. उनके निबन्धों में विषय की गहरी विवेचना और तर्कपूर्ण विश्लेषण मिलता है।

3. वे भाषा-विज्ञान और तुलनात्मक साहित्य के भी गहरे अध्येता थे।

निष्कर्ष:

सुन्दर रेड्डी जी हिन्दी के समालोचक और चिन्तक थे। उन्होंने हिन्दी को दक्षिण भारत में लोकप्रिय बनाने में बड़ा योगदान दिया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को बलिया (उत्तर प्रदेश) के आरत दुबे का छपरा गाँव में हुआ। वे शान्तिनिकेतन और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के आचार्य रहे। उन्होंने निबन्ध, उपन्यास, आलोचना और इतिहास में लिखा। भाषा तत्सम-प्रधान, भावपूर्ण और शैली विचारात्मक है। पद्म भूषण से सम्मानित हुए; 1979 में निधन।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:

अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):

1. अन्य निबन्ध-संग्रह: कल्पलता, आलोक पर्व, विचार और वितर्क।
2. अन्य उपन्यास: चारुचन्द्रलेख, अनामदास का पोथा।
3. इतिहास और आलोचना: हिन्दी साहित्य का आदिकाल, नाथ सम्प्रदाय, सूर साहित्य।
4. उनके ललित निबन्धों में भारतीय संस्कृति और लोक-जीवन का सुन्दर मेल है।

निष्कर्ष:

द्विवेदी जी हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार, उपन्यासकार और आलोचक थे। उन्होंने साहित्य को भारतीय संस्कृति से जोड़कर देखा।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **हरिशंकर परसाई**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1924 को जमानी (होशंगाबाद, मध्य प्रदेश) में हुआ। वे हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार थे। उन्होंने समाज, राजनीति और धर्म के पाखण्ड पर तीखे व्यंग्य लिखे। भाषा सरल, बोलचाल की और शैली चुटीली है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1995 में निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:

तट की खोज, ज्वाला और जल, हँसते हैं रोते हैं, भोलाराम का जीव, वैष्णव की फिसलन, ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, विकलांग श्रद्धा का दौर।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):

1. उन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' पत्रिका निकाली।
2. अन्य संग्रह: सदाचार का ताबीज, शिकायत मुझे भी है, तिरछी रेखाएँ, पगडण्डियों का ज़माना।
3. उपन्यास: रानी नागफनी की कहानी भी उनकी रचना है।

निष्कर्ष:

परसाई जी ने हिन्दी में व्यंग्य को गम्भीर साहित्यिक विधा बनाया और समाज की कुरीतियों पर करारी चोट की।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **जयशंकर प्रसाद**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को काशी (वाराणसी) में हुआ। वे छायावाद के प्रवर्तक और चार प्रमुख स्तम्भों में से एक थे। कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी और निबन्ध में उन्होंने लिखा। उनकी भाषा तत्सम-प्रधान, भावपूर्ण और शैली प्रतीकात्मक है। 1937 में निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:

काव्य: कामायनी, आँसू, लहर, झरना। नाटक: स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी। उपन्यास: कंकाल, तितली। कहानी: आकाशदीप, इन्द्रजाल।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):

1. कामायनी उनका महाकाव्य है और आधुनिक हिन्दी का श्रेष्ठ ग्रन्थ माना जाता है।
2. अन्य काव्य: कानन कुसुम, चित्राधार, प्रेम पथिक, महाराणा का महत्त्व।
3. अन्य नाटक: अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री।
4. उनके पिता देवीप्रसाद काशी में सुँघनी साहू नाम से प्रसिद्ध थे।

निष्कर्ष:

प्रसाद जी ने हिन्दी को नई काव्य-दृष्टि, अमर नाटक और प्रभावशाली कहानियाँ दीं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **सुमित्रानन्दन पन्त**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्दों में):

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई 1900 को कौसानी (अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड) में हुआ। उनका मूल नाम गुसाईं दत्त था। वे प्रकृति के सुकुमार कवि कहलाते हैं। उनके काव्य में छायावाद, प्रगतिवाद और अध्यात्मवाद, तीनों धाराएँ मिलती हैं। भाषा कोमल, मधुर और चित्रात्मक है। 1977 में निधन हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ:

वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, लोकायतन, चिदम्बरा, कला और बूढ़ा चाँद।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों में नहीं गिने जाएँगे):

1. 'चिदम्बरा' पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968) मिला।
2. 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
3. 'लोकायतन' पर सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार मिला और भारत सरकार ने पद्म भूषण दिया।
4. अन्य कृतियाँ: युगवाणी, स्वर्णधूलि, उत्तरा, अतिमा।

निष्कर्ष:

पन्त जी ने हिन्दी कविता को कोमल भाषा, नई संवेदना और व्यापक जीवन-दृष्टि दी।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **महादेवी वर्मा**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यहाँ कवयित्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय और उनकी प्रमुख रचनाएँ 80

शब्दों के भीतर लिखनी हैं।

चरण 2: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। वे छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में गिनी जाती हैं और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या रहीं। उनके काव्य में वेदना, करुणा, रहस्यवाद और प्रकृति-प्रेम मिलता है। भाषा तत्सम-प्रधान, कोमल और संगीतमय खड़ी बोली है। उन्हें 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है।

चरण 3: प्रमुख रचनाएँ:

काव्य: नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा।

गद्य: अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ, पथ के साथी।

चरण 4: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. 'यामा' संग्रह पर उन्हें 1982 ई. में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
2. उन्हें पद्म भूषण और पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया।
3. उनका निधन 1987 ई. में प्रयागराज में हुआ।

निष्कर्ष:

महादेवी वर्मा वेदना और करुणा की श्रेष्ठ कवयित्री तथा संवेदनशील गद्य-लेखिका थीं।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम 80 शब्द): **रामधारी सिंह 'दिनकर'**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का साहित्यिक परिचय और उनकी प्रमुख रचनाएँ अधिकतम 80 शब्दों में लिखनी हैं।

चरण 2: साहित्यिक परिचय (अधिकतम 80 शब्द):

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 1908 ई. में सिमरिया (बेगूसराय, बिहार) में हुआ। वे राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी कवि हैं और 'राष्ट्रकवि' कहलाते हैं। उनकी कविता में देशप्रेम, क्रान्ति, शोषितों के प्रति सहानुभूति तथा शृंगार का सुन्दर मेल है। भाषा तत्सम-प्रधान, प्रवाहमयी खड़ी बोली है और शैली ओजपूर्ण है।

चरण 3: प्रमुख रचनाएँ:

काव्य: रेणुका, हुंकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा।
गद्य: संस्कृति के चार अध्याय, अर्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर।

चरण 4: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. 'उर्वशी' पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार (1972) मिला।
2. 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
3. वे राज्यसभा के सदस्य रहे और पद्म भूषण से सम्मानित हुए। उनका निधन 1974 ई. में हुआ।

निष्कर्ष:

दिनकर जी वीर रस और राष्ट्रीय भावना के अग्रणी कवि हैं।

6. 'ध्रुव यात्रा' कहानी का सारांश लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:

'ध्रुवयात्रा' हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार जैनेन्द्र कुमार की मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसके मुख्य पात्र राजा रिपुदमन, उर्मिला और आचार्य मारुति हैं।

चरण 2: सारांश (80 शब्दों में):

राजा रिपुदमन उत्तरी ध्रुव की विजय-यात्रा करके लौटता है। उसकी प्रेमिका उर्मिला

उसे व्यक्तिगत सुख में बँधने नहीं देती और दक्षिणी ध्रुव की यात्रा के लिए प्रेरित करती है। वह विवाह के सामाजिक बन्धन को स्वीकार नहीं करती, क्योंकि उसके लिए प्रेम त्याग और ऊँचे लक्ष्य का नाम है। कहानी के अन्त में रिपुदमन के आत्मबलिदान का समाचार मिलता है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. कहानी में प्रेम और कर्तव्य का द्वन्द्व दिखाया गया है।
2. उर्मिला का चरित्र दृढ़ और आदर्शवादी है।
3. शैली मनोवैज्ञानिक और भावप्रधान है।

निष्कर्ष:

यह कहानी बताती है कि सच्चा प्रेम मनुष्य को स्वार्थ से ऊपर उठाकर महान कार्य की ओर ले जाता है।

OR

'बहादुर' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:

'बहादुर' अमरकान्त की प्रसिद्ध कहानी है। इसमें निम्न-मध्यवर्गीय परिवार और उसके घरेलू नौकर बहादुर की कथा है।

चरण 2: उद्देश्य (80 शब्दों में):

'बहादुर' का उद्देश्य घरेलू नौकर के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार को सामने लाना है। कहानी बाल-श्रम, झूठे आरोप और बिना जाँचे की गई मारपीट का विरोध करती है। लेखक दिखाता है कि गरीब बच्चे में भी आत्मसम्मान और प्रेम पाने की चाह होती है। बहादुर के चले जाने पर परिवार का पश्चाताप पाठक को संवेदनशील बनाता है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. मालिक की झूठी शान और वर्ग-भेद नौकर के प्रति कठोरता बढ़ाते हैं।
2. बहादुर पहले घर में खुशी लाता है, फिर डाँट और मार सहता है।
3. रुपये चुराने के आरोप में थप्पड़ खाने के बाद वह घर छोड़ देता है।

निष्कर्ष:

कहानी पाठक को दूसरों के सम्मान और करुणा का पाठ पढ़ाती है।



7(a). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथासार (80 शब्दों में):

‘मुक्तियज्ञ’ सुमित्रानन्दन पन्त का खण्डकाव्य है। इसमें गाँधी जी के नेतृत्व में चले स्वतन्त्रता-संग्राम की कथा है। डाण्डी-यात्रा और नमक-कानून भंग से कथा आरम्भ होती है। सरकार के दमन से जेलें भर जाती हैं। साइमन कमीशन का बहिष्कार और छुआछूत-विरोधी अभियान चलते हैं। 1942 में ‘भारत छोड़ो’ आन्दोलन होता है और जेल में कस्तूरबा का निधन होता है। 1947 में देश स्वतन्त्र होता है, पर विभाजन की पीड़ा मिलती है। अन्त में गाँधी जी का बलिदान होता है।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. यह काव्य पन्त जी के महाकाव्य ‘लोकायतन’ का अंश माना जाता है।
2. कथा का काल लगभग 1921 से 1947 तक का है।
3. स्वतन्त्रता की प्राप्ति को कवि ने एक महायज्ञ का रूप दिया है।

निष्कर्ष:

काव्य का सन्देश है कि सत्य और अहिंसा के बल पर मुक्ति पाई जा सकती है।

OR

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधीजी का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:

सुमित्रानन्दन पन्त कृत 'मुक्तियज्ञ' गांधी-युग के स्वतन्त्रता-संघर्ष का काव्य है। इसके नायक महात्मा गांधी हैं और सारी कथा उन्हीं के नेतृत्व में आगे बढ़ती है।

चरण 2: चरित्रगत विशेषताएँ:

1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: देश में हिंसा फैलने पर भी वे सत्य और अहिंसा के मार्ग पर अटल रहते हैं।
2. दृढ़-प्रतिज्ञ: दाण्डी-यात्रा में वे चौबीस दिन पैदल चलकर समुद्र-तट पर नमक-कानून तोड़ते हैं। कोई बाधा उन्हें रोक नहीं पाती।
3. जन-नायक: जनता उनके एक संकेत पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहती है।
4. समदर्शी: वे सबको समान दृष्टि से देखते हैं और छुआछूत मिटाने का प्रयास करते हैं।
5. मानवता के पोषक: उनका विश्वास है कि घृणा प्रेम से ही मिटती है।

निष्कर्ष:

गांधीजी सत्य, प्रेम, त्याग और दृढ़ता के मूर्त रूप हैं। पन्त जी ने उन्हें युग-प्रवर्तक महामानव के रूप में चित्रित किया है।

7(b). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: खण्डकाव्य का परिचय:

‘सत्य की जीत’ के रचयिता द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी हैं। इसकी कथा महाभारत के द्रौपदी-चीरहरण प्रसंग पर आधारित है।

चरण 2: कथावस्तु:

दुर्योधन छल से पाण्डवों को द्यूत-क्रीड़ा के लिए बुलाता है। युधिष्ठिर एक-एक कर सब कुछ हारते हैं, फिर स्वयं को और अन्त में द्रौपदी को भी दाँव पर लगाकर हार जाते हैं।

दुःशासन द्रौपदी को केश पकड़कर भरी सभा में खींच लाता है। द्रौपदी निर्भय होकर पूछती है कि जो स्वयं को पहले हार चुका हो, उसे मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था।

सभा में इस प्रश्न पर पक्ष और विपक्ष में तर्क होते हैं। दुःशासन बल को ही सत्य और न्याय मानता है। विकर्ण जैसे सभासद द्रौपदी का समर्थन करते हैं।

द्रौपदी का तेजस्वी रूप और सत्य का बल देखकर दुःशासन का साहस टूट जाता है और वह चीरहरण में सफल नहीं होता।

अन्त में धृतराष्ट्र अन्याय स्वीकार करते हैं, पाण्डवों को मुक्त करते हैं और उनका राज्य लौटा देते हैं।

निष्कर्ष:

काव्य का सन्देश है कि अन्त में जीत सत्य, धर्म और न्याय की ही होती है।

OR

‘सत्य की जीत’ खण्डकाव्य के आधार पर दुर्योधन का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: चरित्र-चित्रण (80 शब्दों में):

दुर्योधन 'सत्य की जीत' का खलनायक है। वह अहंकारी और हठी है, इसलिए बड़ों की सलाह नहीं मानता। पाण्डवों का वैभव देखकर वह ईर्ष्या से जलता है। जुए में छल से उन्हें हराता है। नारी का सम्मान न करके वह द्रौपदी को भरी सभा में अपमानित कराता है। उसमें आत्मविवेक और लज्जा का अभाव है। अन्त में सत्य के आगे उसका अन्याय हार जाता है।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. काव्य के रचयिता द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी हैं और कथा महाभारत की द्यूत-सभा पर आधारित है।
2. दुर्योधन की शक्ति का आधार दुःशासन जैसे साथी हैं।
3. उसका चरित्र सिखाता है कि अन्याय और अहंकार का अन्त पराजय है।

निष्कर्ष:

दुर्योधन अधर्म और दम्भ का प्रतीक है। उसकी हार से 'सत्य की जीत' शीर्षक सार्थक होता है।

7(c). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथावस्तु (80 शब्दों में):

'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का सात सर्गों का खण्डकाव्य है। कर्ण सूतपुत्र कहलाकर अपमानित होता है, पर दुर्योधन उसे अंगराज बनाता है। परशुराम से शिक्षा पाकर उसे शाप मिलता है। कृष्ण का शान्ति-प्रस्ताव विफल होता है। इन्द्र उससे कवच-कुण्डल ले जाते हैं। कुन्ती के बुलाने पर भी वह मित्रता नहीं छोड़ता। युद्ध में रथ-चक्र धँसने पर अर्जुन के हाथों कर्ण वीरगति पाता है।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. 'रश्मिरथी' का अर्थ है सूर्य-किरणों का रथ वाला, अर्थात् कर्ण।
2. कर्ण को दिया गया शाप था कि निर्णायक समय पर वह अस्त्र-विद्या भूल जाएगा।
3. कुन्ती को वचन मिला कि अर्जुन को छोड़ वह किसी पाण्डव को नहीं मारेगा।

निष्कर्ष:

काव्य दिखाता है कि मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
(अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: चारित्रिक विशेषताएँ (80 शब्दों में):

कर्ण 'रश्मिरथी' का नायक है। (1) महान योद्धा: उसकी धनुर्विद्या से सब चकित होते हैं। (2) दानवीर: वह इन्द्र को कवच-कुण्डल दान कर देता है। (3) सच्चा मित्र: दुर्योधन के उपकार के कारण वह अन्त तक उसका साथ देता है। (4) स्वाभिमानी: वह जाति को नहीं, कर्म को बड़ा मानता है। (5) सत्यनिष्ठ: वह कुन्ती को दिया वचन निभाता है।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. वह सूत अधिरथ के घर पला, इसलिए जीवन भर सूतपुत्र कहलाकर अपमान सहता रहा।
2. वह गुरुभक्त भी है। परशुराम की नींद न टूटे, इसलिए कीड़े का डंक सहता रहा।

निष्कर्ष:

कर्ण वीर, दानी, स्वाभिमानी और मित्र-भक्त है। दिनकर ने उसे महान चरित्र के रूप में गढ़ा है।

7(d). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथानक (80 शब्दों में):

'आलोकवृत्त' गुलाब खण्डेलवाल का खण्डकाव्य है। इसमें गाँधी जी के जन्म से स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक का जीवन है। पोरबन्दर में जन्मे मोहनदास इंग्लैण्ड से बैरिस्टर बनकर लौटते हैं। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध सत्याग्रह करते हैं। भारत में चम्पारन, असहयोग, नमक-सत्याग्रह और 'भारत छोड़ो' का नेतृत्व करते हैं। देश स्वतन्त्र होता है, पर दंगों से वे दुःखी रहते हैं।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. काव्य आठ सर्गों में विभक्त है।
2. गाँधी जी ने माता को मद्य-मांस त्यागने का वचन दिया था।
3. जेल में कस्तूरबा से उनका मार्मिक संवाद भी काव्य में आता है।

निष्कर्ष:

काव्य गाँधी जी को सत्य, अहिंसा और मानव-कल्याण के आलोक-पुंज के रूप में प्रस्तुत करता है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में आलोकवृत्त खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी के चरित्र की विशेषताएँ बतानी

हैं। उत्तर 80 शब्दों के भीतर लिखना है।

चरण 2: चरित्र-चित्रण (अधिकतम 80 शब्द):

महात्मा गाँधी आलोकवृत्त के नायक हैं। वे सत्य और अहिंसा के अनन्य पुजारी हैं। उनमें देशप्रेम और त्याग की भावना है। वे सादा जीवन और उच्च विचार के आदर्श हैं। सत्याग्रह और असहयोग द्वारा उन्होंने अंग्रेजों का सामना किया। हरिजन-उद्धार और साम्प्रदायिक सद्भाव उनके प्रिय कार्य हैं। वे दृढ़ संकल्पी, निर्भीक और करुणामय हैं। उनके नेतृत्व ने देश को आज़ादी का मार्ग दिखाया।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों की गिनती से बाहर):

1. सत्य के प्रयोग: गाँधी जी ने जीवन के हर काम में सत्य को कसौटी बनाया।
2. अहिंसा की शक्ति: अत्याचार सहकर भी उन्होंने हिंसा का सहारा नहीं लिया।
3. सर्वधर्म समभाव: सब धर्मों के लोगों को वे एक सूत्र में बाँधना चाहते थे।
4. जननायक: सत्याग्रह, असहयोग और भारत छोड़ो जैसे आन्दोलनों में उन्होंने करोड़ों लोगों को साथ जोड़ा।

निष्कर्ष:

आलोकवृत्त के गाँधी सत्य, अहिंसा, त्याग और देशभक्ति की जीवित मूर्ति हैं। उनका चरित्र आज भी प्रेरणा देता है।

7(e). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

त्यागपथी खण्डकाव्य के नायक सम्राट हर्षवर्धन हैं। उसकी कथा का सार 80 शब्दों में अपने शब्दों में लिखना है।

चरण 2: कथावस्तु (अधिकतम 80 शब्द):

थानेश्वर नरेश प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद राज्यवर्धन राजा बने। मालवराज ने हर्ष के बहनोई ग्रहवर्मा को मार डाला और बहन राज्यश्री को बन्दी बना लिया। राज्यवर्धन ने मालवराज को हराया, पर गौड़ नरेश शशांक ने छल से उनकी हत्या कर दी। तब हर्षवर्धन राजा बने। उन्होंने बहन को खोजकर बचाया और शत्रुओं का दमन किया। अन्त में वे राज-वैभव त्यागकर सेवा और दान का मार्ग अपनाते हैं।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों की गिनती से बाहर):

1. हर्ष ने कन्नौज और थानेश्वर को मिलाकर विशाल साम्राज्य बनाया।
2. वे प्रजा-हित को अपना धर्म मानते थे और हर पाँच वर्ष में प्रयाग में अपना सारा धन दान कर देते थे।
3. काव्य का शीर्षक त्यागपथी उनके इसी त्याग-मार्ग की ओर संकेत करता है।

निष्कर्ष:

कथा का मूल सन्देश है कि सच्चा शासक वही है जो सत्ता का उपयोग जन-सेवा और त्याग के लिए करे।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर हर्षवर्धन की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

त्यागपथी खण्डकाव्य के नायक हर्षवर्धन के चरित्र के गुण बताने हैं। उत्तर 80 शब्दों के भीतर रखना है।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ (अधिकतम 80 शब्द):

1. वीर और पराक्रमी: उन्होंने शत्रुओं को पराजित कर साम्राज्य बढ़ाया।
2. भ्रातृ-प्रेमी: भाई राज्यवर्धन की मृत्यु पर वे शोक से भर उठे और बहन राज्यश्री को संकट से बचाया।

3. कर्तव्यनिष्ठ शासक: उन्होंने प्रजा के सुख को सबसे ऊपर रखा।
4. त्यागी: वे राज-वैभव से निर्लिप्त रहे और अपना धन दान करते रहे।
5. उदार और धर्मसहिष्णु: सभी धर्मों का आदर करते थे।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों की गिनती से बाहर):

हर्ष विद्वानों और कवियों के आश्रयदाता थे। वे न्यायप्रिय और विनम्र थे। शीर्षक त्यागपथी उनके त्यागमय चरित्र को ही प्रकट करता है।

निष्कर्ष:

हर्षवर्धन वीरता, कर्तव्य-भाव और त्याग के आदर्श नायक हैं।

7(f). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

श्रवणकुमार खण्डकाव्य की कथा रामायण के प्रसिद्ध प्रसंग पर आधारित है। उसका सार 80 शब्दों में लिखना है।

चरण 2: कथासार (अधिकतम 80 शब्द):

श्रवणकुमार अपने अन्धे माता-पिता का अत्यन्त सेवाभावी पुत्र है और सरयू-तट के आश्रम में उनकी सेवा करता है। एक दिन माता-पिता को प्यास लगती है। श्रवण सरयू से जल लेने जाता है। शिकार को निकले राजा दशरथ शब्द सुनकर उसे पशु समझ बाण चला देते हैं। श्रवण घायल होकर प्राण त्याग देता है। पुत्र-शोक में माता-पिता दशरथ को पुत्र-वियोग में मरने का शाप देते हैं।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों की गिनती से बाहर):

1. मरते समय श्रवण को अपनी चिन्ता नहीं थी, माता-पिता की प्यास की चिन्ता थी।

2. दशरथ ने पश्चाताप के साथ जल पहुँचाया और पूरी घटना सुनाई।
3. यही शाप आगे चलकर राम के वनवास के समय दशरथ की मृत्यु का कारण बना।

निष्कर्ष:

काव्य मातृ-पितृ भक्ति का उच्च आदर्श सामने रखता है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर 'दशरथ' का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

श्रवणकुमार खण्डकाव्य में अयोध्या-नरेश दशरथ का चरित्र-चित्रण करना है। उत्तर 80 शब्दों के भीतर लिखना है।

चरण 2: दशरथ का चरित्र (अधिकतम 80 शब्द):

1. प्रतापी राजा: वे अयोध्या के यशस्वी और प्रजापालक शासक हैं।
2. आखेट-प्रेमी: वन में शिकार खेलते समय ही उनसे भूल होती है।
3. सत्यवादी: वे अपना अपराध छिपाते नहीं, श्रवण के माता-पिता को सब कुछ सच बता देते हैं।
4. पश्चातापी और भावुक: भूल पर उनका हृदय ग्लानि से भर जाता है।
5. विनम्र: वे शाप को भी सिर झुकाकर स्वीकार करते हैं।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (80 शब्दों की गिनती से बाहर):

दशरथ की भूल जानबूझकर नहीं थी, इसलिए पाठक को उनसे सहानुभूति होती है। उनका चरित्र यह भी सिखाता है कि बिना देखे कार्य करना भारी पड़ता है।

निष्कर्ष:

दशरथ एक सत्यनिष्ठ, संवेदनशील और पश्चाताप करने वाले राजा हैं।



8(a). दिए गए संस्कृत गद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात् । अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति । सा मैत्रेयी उवाच-येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम् । यदेव भगवान् केवलममृतत्वसाधनं जानाति, तदेव मे ब्रूहि । याज्ञवल्क्य उवाच - प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत गद्यांश हमारी संस्कृत-पाठ्यपुस्तक में संकलित याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के संवाद से लिया गया है। इसका मूल स्रोत बृहदारण्यक उपनिषद् है। इसमें महर्षि याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी मैत्रेयी की बातचीत है।

चरण 2: शब्दार्थ:

उपकरणवताम् = साधन-सम्पन्न लोगों का

जीवनम् = जीवन

अमृतत्वस्य = अमरता (मोक्ष) की

नाशा = न + आशा, अर्थात् आशा नहीं

वित्तेन = धन से

ब्रूहि = कहिए

भाषसे = बोलती हो

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

याज्ञवल्क्य ने कहा: जैसा साधन-सम्पन्न लोगों का जीवन होता है, वैसा ही तुम्हारा जीवन भी होगा। परन्तु धन से अमरता प्राप्त होने की कोई आशा नहीं है।

उस मैत्रेयी ने कहा: जिस धन से मैं अमर न हो सकूँ, उसे लेकर मैं क्या करूँगी?

भगवन्! आप अमरता का जो एकमात्र साधन जानते हैं, वही मुझे बताइए।

याज्ञवल्क्य बोले: तुम हमें प्रिय हो और प्रिय बात ही कह रही हो।

चरण 4: सार:

धन से सुख-सुविधा मिल सकती है, अमरता या मोक्ष नहीं। मैत्रेयी को भौतिक सम्पत्ति से अधिक ज्ञान प्यारा था।

निष्कर्ष:

इस अंश का सन्दर्भ सहित हिन्दी अनुवाद ऊपर दिया गया है।

OR

दिए गए संस्कृत गद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

महामना विद्वान् वक्ता, धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत् । परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत् । यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत् । प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत् ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'महामना मालवीयः' से लिया गया है, जिसमें महामना पं. मदनमोहन मालवीय के जीवन और गुणों का वर्णन है। इसमें उनकी विद्वत्ता, वक्तृत्व और सबसे बढ़कर जनसेवा की भावना बताई गई है।

चरण 2: शब्दार्थ:

महामना = उदार और महान मन वाले

पटुः = कुशल, चतुर

सर्वोच्चगुणः = सबसे ऊँचा गुण

जनसेवा = लोगों की सेवा

पीड्यमानान् = पीड़ित होते हुआओं को

साहाय्यम् = सहायता

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:

महामना विद्वान्, वक्ता, धार्मिक नेता और कुशल पत्रकार थे। उनका सबसे ऊँचा गुण जनसेवा ही था। जहाँ कहीं भी वे दुःखी और पीड़ित लोगों को देखते थे, वहाँ शीघ्र ही उपस्थित हो जाते थे और हर प्रकार की सहायता करते थे। प्राणियों की सेवा करना उनका स्वभाव ही था।

चरण 4: सार:

विद्या और पद से बड़ा गुण दूसरों के दुःख में काम आना है। महामना में यही गुण सबसे ऊपर था।

निष्कर्ष:

गद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी अनुवाद पूरा हुआ।

8(b). दिए गए संस्कृत पद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम् ।
अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'जातक-कथा' में आई उलूक-जातक की कथा से लिया गया है।

चरण 2: प्रसंग:

कथा में पक्षी अपना राजा चुनने के लिए एकत्र होते हैं। वे उल्लू को राजा बनाने की तैयारी करते हैं। तभी एक कौआ उठकर खड़ा होता है और इसका विरोध करते हुए यह बात कहता है।

चरण 3: शब्दार्थ:

न मे रोचते = मुझे अच्छा नहीं लगता। भद्रं वः = आप सबका कल्याण हो। उलूकस्य अभिषेचनम् = उल्लू का राज्याभिषेक। अक्रुद्धस्य = जो क्रोधित नहीं है, उसके। मुखं पश्य = मुख को देखो। कथं = कैसा, कैसे। क्रुद्धः भविष्यति = क्रोधित होगा।

चरण 4: हिन्दी अनुवाद:

आप सबका भला हो, किन्तु उल्लू को राजा के पद पर बैठाना मुझे पसन्द नहीं है। जो क्रोध में नहीं है, उसका मुख ही इतना भयानक दिखता है। उसे देखो, जब यह क्रोधित होगा तब इसका रूप कैसा हो जाएगा?

चरण 5: भावार्थ:

जिसका स्वभाव और चेहरा शान्त दशा में भी कठोर और डरावना है, वह शासक बनकर प्रजा को कष्ट ही देगा। इसलिए राजा का चुनाव सोच-समझकर उसके गुण और स्वभाव देखकर करना चाहिए।

निष्कर्ष:

कौआ उल्लू के क्रूर स्वभाव के कारण उसके अभिषेक का विरोध करता है और सबको सावधान करता है।

OR

दिए गए संस्कृत पद्यांश का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:

यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' में संकलित नीतिपरक सुभाषित (सूक्ति) है। इसमें दुर्जन और सज्जन के स्वभाव की तुलना की गई है।

चरण 2: प्रसंग:

कवि यह बताना चाहता है कि विद्या, धन और शक्ति एक ही होने पर भी दुष्ट और सज्जन के हाथ में अलग-अलग काम करती हैं।

चरण 3: शब्दार्थ:

विवादाय = झगड़े के लिए। मदाय = अहंकार के लिए। परेषां परिपीडनाय = दूसरों को कष्ट देने के लिए। खलस्य = दुष्ट का। साधोः = सज्जन का। विपरीतम् = उलटा। रक्षणाय = रक्षा के लिए।

चरण 4: हिन्दी अनुवाद:

दुष्ट व्यक्ति की विद्या बहस और झगड़े के लिए होती है, धन घमंड के लिए होता है और शक्ति दूसरों को सताने के लिए होती है। सज्जन व्यक्ति के लिए ये तीनों बातें इससे उलटी होती हैं। उसकी विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दुर्बलों की रक्षा के लिए होती है।

चरण 5: भावार्थ:

गुण अपने आप अच्छे या बुरे नहीं होते। उनका उपयोग करने वाले का स्वभाव उन्हें अच्छा या बुरा बनाता है।

निष्कर्ष:

हमें विद्या, धन और बल का प्रयोग ज्ञान, दान और रक्षा में करना चाहिए।

9. निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **दो नावों पर पैर रखना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न में दिए गए मुहावरे 'दो नावों पर पैर रखना' का अर्थ लिखना है और उसका वाक्य में प्रयोग करना है। यहाँ यही मुहावरा हल किया जा रहा है।

चरण 2: अर्थ:

जब कोई व्यक्ति एक ही समय में दो अलग या विरोधी पक्षों से जुड़ा रहना चाहता है, तब यह मुहावरा प्रयोग होता है। ऐसा व्यक्ति किसी एक पर टिक नहीं पाता। अंत में उसे दोनों ओर से हानि होती है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:

जो छात्र पढ़ाई और खेल दोनों को आधे मन से करता है, वह दो नावों पर पैर रखने के कारण किसी में सफल नहीं हो पाता।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: दो विरोधी बातों में एक साथ लगे रहना। ऐसा करने से काम बिगड़ जाता है।

OR

निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **सूर्य को दीपक दिखाना**

Correct Answer: —

Solution:**चरण 1: प्रश्न को समझें:**

यहाँ मुहावरा 'सूर्य को दीपक दिखाना' हल करना है। इसका अर्थ लिखकर एक वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:

सूर्य स्वयं प्रकाश का सबसे बड़ा स्रोत है। उसे दीपक दिखाना व्यर्थ है। इसलिए यह मुहावरा तब बोलते हैं जब किसी महान, गुणी या विद्वान व्यक्ति को कुछ सिखाने या उसकी सहायता करने का प्रयास किया जाए।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:

गणित के प्रकांड विद्वान के सामने सरल जोड़ की विधि बताना सूर्य को दीपक

दिखाना है।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: जो पहले से ही श्रेष्ठ हो, उसे कुछ दिखाना या समझाना।

OR

निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अपना हाथ जगन्नाथ**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यह लोकोक्ति 'अपना हाथ जगन्नाथ' है। इसका अर्थ बताना है और वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:

इस लोकोक्ति का अर्थ है कि अपना काम अपने हाथ से करना ही सबसे अच्छा होता है। दूसरों पर निर्भर रहने से काम देर से या ठीक से नहीं होता। अपने किए काम में संतोष और भरोसा रहता है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:

रमेश ने नौकर का इंतजार करने के बजाय स्वयं खेत जोत लिया, क्योंकि अपना हाथ जगन्नाथ होता है।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: अपना काम स्वयं करना ही लाभकारी है।

OR

निम्नलिखित लोकोक्तियों एवं मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **का वर्षा जब कृषि सुखाने**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

यहाँ लोकोक्ति 'का वर्षा जब कृषि सुखाने' का अर्थ और वाक्य में प्रयोग लिखना है।

चरण 2: अर्थ:

यदि फसल पानी के अभाव में सूख जाए और उसके बाद वर्षा हो, तो उसका कोई लाभ नहीं। इसी प्रकार काम बिगड़ जाने के बाद मिली सहायता बेकार होती है। इसका अर्थ है: अवसर निकल जाने पर किया गया प्रयत्न व्यर्थ है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:

परीक्षा बीत जाने के बाद पढ़ाई करना का वर्षा जब कृषि सुखाने वाली बात है।

अंतिम उत्तर:

अर्थ: समय बीत जाने पर मिली मदद का कोई लाभ नहीं होता।

10(i). *अपठित गद्यांश:* आजाद भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और सम्मान दोनों प्राप्त हुए। सरकारों ने उन्हें पैसे से तौलना चाहा। कतिपय वर्ष पूर्व उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उन्हें 51 हजार रुपये भेंट किए। भाभी ने वे रूपए वहीं वापस कर दिए। उन्होंने कहा कि “जब हम स्वाधीनता के लिए संग्राम कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा नहीं थी, केवल स्वाधीनता प्राप्ति लक्ष्य था। इस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बनाया जाय।”

(i) स्वतंत्र भारत में दुर्गा भाभी का सम्मान किस प्रकार किया गया?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न पूछता है कि आजाद भारत में दुर्गा भाभी का सम्मान किस रूप में किया गया। उत्तर गद्यांश की पहली पंक्तियों और समारोह के प्रसंग में है।

चरण 2: गद्यांश से तथ्य:

गद्यांश के अनुसार स्वतंत्र भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और सम्मान दोनों मिले। सरकारों ने उन्हें पैसों से तौलना चाहा, अर्थात् धन देकर उनके त्याग का मूल्य आँका। कुछ वर्ष पहले एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उन्हें 51 हजार रुपये भेंट किए।

निष्कर्ष:

स्वतंत्र भारत में उनका सम्मान सम्मान-समारोह आयोजित करके और मुख्यमंत्री द्वारा 51 हजार रुपये की राशि भेंट करके किया गया।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* आजाद भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और सम्मान दोनों प्राप्त हुए। सरकारों ने उन्हें पैसों से तौलना चाहा। कतिपय वर्ष पूर्व उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उन्हें 51 हजार रुपये भेंट किए। भाभी ने वे रूपए वहीं वापस कर दिए। उन्होंने कहा कि “जब हम स्वाधीनता के लिए संग्राम कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा नहीं थी, केवल स्वाधीनता प्राप्ति लक्ष्य था। इस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बनाया जाय।”

(ii) स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने का लक्ष्य क्या था?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

प्रश्न स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के उद्देश्य के बारे में है। इसका उत्तर दुर्गा भाभी के कथन में मिलता है।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:

दुर्गा भाभी ने कहा कि जब वे स्वाधीनता के लिए संग्राम कर रही थीं, तब उनके मन में किसी व्यक्तिगत लाभ की इच्छा नहीं थी।
उस समय उनका एक ही लक्ष्य था, देश को स्वाधीनता दिलाना।

निष्कर्ष:

स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने का लक्ष्य केवल स्वाधीनता की प्राप्ति था, कोई निजी लाभ या धन पाना नहीं।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* आजाद भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और सम्मान दोनों प्राप्त हुए। सरकारों ने उन्हें पैसों से तौलना चाहा। कतिपय वर्ष पूर्व उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उन्हें 51 हजार रुपये भेंट किए। भाभी ने वे रूपए वहीं वापस कर दिए। उन्होंने कहा कि “जब हम स्वाधीनता के लिए संग्राम कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ की आकांक्षा नहीं थी, केवल स्वाधीनता प्राप्ति लक्ष्य था। इस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बनाया जाय।”

(iii) दुर्गा भाभी को सम्मान में भेंट किए गए धन को उन्होंने किस हेतु प्रयोग करने के लिए लौटा दिया था?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

सम्मान में 51 हजार रुपये भेंट हुए थे। प्रश्न है कि दुर्गा भाभी ने यह राशि किस काम के लिए लौटा दी।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:

भाभी ने रुपये वहीं वापस कर दिए और कहा कि इस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बनाया जाय।

निष्कर्ष:

दुर्गा भाभी ने वह धन शहीदों के स्मारक के निर्माण के लिए लौटाया था। इससे उनका त्याग और निःस्वार्थ भाव प्रकट होता है।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: मनोज - मनोज्ञ

- (A) मन का ओज - मन का ज्ञान
- (B) मनु का जन्म - मन की सुन्दरता
- (C) कामदेव - सुन्दर
- (D) मन के अनुसार - मन का ज्ञान

Correct Answer: (C) कामदेव - सुन्दर

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

दिए गए शब्द-युग्म मनोज और मनोज्ञ हैं। दोनों सुनने में मिलते-जुलते हैं, पर अर्थ अलग-अलग हैं। हमें दोनों का सही अर्थ-युग्म चुनना है।

चरण 2: दोनों शब्दों का अर्थ:

मनोज = मन से उत्पन्न होने वाला, अर्थात् कामदेव।

मनोज्ञ = जो मन को जँचे या भाए, अर्थात् सुन्दर, मनोहर।

इस प्रकार सही युग्म है: कामदेव - सुन्दर।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:

(A) मन का ओज - मन का ज्ञान: इनमें से कोई भी अर्थ शब्दकोश में नहीं मिलता।

(B) मनु का जन्म - मन की सुन्दरता: मनोज का अर्थ मनु का जन्म नहीं होता।

(D) मन के अनुसार - मन का ज्ञान: न मनोज का यह अर्थ है, न मनोज्ञ का।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) कामदेव - सुन्दर है।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: शूर - सुर

- (A) अन्धा - जाग्रत
- (B) वीर - देवता
- (C) सुप्त - संगीत
- (D) अज्ञ - विज्ञ

Correct Answer: (B) वीर - देवता

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

शूर और सुर सुनने में एक जैसे लगते हैं, पर दोनों के अर्थ भिन्न हैं। प्रश्न में दोनों के सही अर्थ का युग्म चुनना है।

चरण 2: अर्थ जानें:

शूर = बहादुर, पराक्रमी, अर्थात् वीर।

सुर = देवता। इसका विलोम असुर है।

सही युग्म: वीर - देवता।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच:

(A) अन्धा - जाग्रत: शूर का अर्थ अन्धा नहीं होता, इसलिए गलत है।

(C) सुप्त - संगीत: सुप्त का अर्थ सोया हुआ है, यह शूर का अर्थ नहीं है।

(D) अज्ञ - विज्ञ: ये तो परस्पर विलोम शब्द हैं और इनका शूर-सुर से कोई संबंध नहीं है।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) वीर - देवता है।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **द्विज**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

द्विज एक अनेकार्थी शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'दो बार जन्म लेने वाला'। इसके अलग-अलग प्रसंगों में अलग अर्थ होते हैं।

चरण 2: दो अर्थ:

1. ब्राह्मण: उपनयन संस्कार को दूसरा जन्म माना जाता है, इसलिए ब्राह्मण (तथा क्षत्रिय और वैश्य) को द्विज कहा गया। जैसे: द्विज ने यज्ञ सम्पन्न कराया।
2. पक्षी: पक्षी पहले अण्डे के रूप में और फिर अण्डे से बाहर आकर जन्म लेता है, इसलिए वह भी द्विज है। जैसे: वृक्ष पर द्विज चहचहा रहे हैं।

अंतिम उत्तर:

द्विज के दो अर्थ हैं: (1) ब्राह्मण, (2) पक्षी। इसके अन्य अर्थ दाँत और चन्द्रमा भी हैं।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **शिखा**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

शिखा शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं। प्रसंग देखकर ही सही अर्थ लिया जाता है।

चरण 2: दो अर्थ:

1. चोटी: सिर के ऊपरी भाग पर रखे जाने वाले बालों का गुच्छा। जैसे: पण्डित जी ने शिखा में गाँठ बाँध ली।
2. लौ या ज्वाला: दीपक या अग्नि की उठती हुई लपट। जैसे: दीपक की शिखा हवा में

काँप रही थी।

अंतिम उत्तर:

शिखा के दो अर्थ हैं: (1) चोटी, (2) लौ (ज्वाला)। इसके अन्य अर्थ पर्वत का शिखर और मोर की कलगी भी हैं।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **मित्र**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

मित्र शब्द एक ही रूप में दो अलग-अलग वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है, इसलिए यह अनेकार्थी शब्द है।

चरण 2: दो अर्थ:

1. दोस्त या सखा: वह व्यक्ति जो सुख-दुख में साथ दे। जैसे: सच्चा मित्र विपत्ति में काम आता है।
2. सूर्य: सूर्य का एक नाम मित्र भी है। जैसे: मित्र के उदय होते ही अन्धकार भाग गया।

अंतिम उत्तर:

मित्र के दो अर्थ हैं: (1) दोस्त, (2) सूर्य।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए: **विधि**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

‘विधि’ शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। यहाँ इसके दो सही अर्थ लिखने हैं।

चरण 2: शब्द के अर्थ:

1. विधि = तरीका, ढंग या प्रणाली।
2. विधि = भाग्य या प्रारब्ध।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:

विधि (तरीका) - इस प्रयोग की विधि बहुत सरल है।

विधि (भाग्य) - विधि के आगे किसी का वश नहीं चलता।

अंतिम उत्तर:

‘विधि’ के दो अर्थ हैं: (1) तरीका, (2) भाग्य।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: जिसका कहीं भी अन्त न हो -

- (A) अखण्ड
- (B) अनन्त
- (C) अद्वितीय
- (D) असंख्य

Correct Answer: (B) अनन्त

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

वाक्यांश है: जिसका कहीं भी अन्त न हो। इसके लिए एक सटीक शब्द चुनना है।

चरण 2: सही शब्द:

अन्त का अर्थ अंत या समाप्ति है। जिसका अन्त न हो, उसके लिए अनन्त शब्द बनता

है। अन = नहीं + अन्त = अंत।

अनन्त का प्रयोग आकाश, ईश्वर या समय के लिए होता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का अर्थ:

(A) अखण्ड: जिसके टुकड़े न हों, जो पूरा हो।

(C) अद्वितीय: जिसके समान दूसरा न हो।

(D) असंख्य: जिसकी गिनती न हो सके।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (B) अनन्त है।

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: जो पढ़ना-लिखना जानता हो -

(A) निरक्षर

(B) अनपढ़

(C) साक्षर

(D) विद्वान्

Correct Answer: (C) साक्षर

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:

वाक्यांश है: जो पढ़ना-लिखना जानता हो। इसके लिए सही एक शब्द बताना है।

चरण 2: सही शब्द:

जो व्यक्ति अक्षर पढ़ और लिख सकता है, उसे साक्षर कहते हैं। साक्षर का विलोम निरक्षर है।

चरण 3: अन्य विकल्पों का अर्थ:

- (A) निरक्षर: जो पढ़ना-लिखना न जानता हो। यह उलटा अर्थ देता है।
(B) अनपढ़: यह भी वही है जो पढ़ा न हो।
(D) विद्वान्: जिसे बहुत ज्ञान हो। पढ़ना-लिखना जानने मात्र से कोई विद्वान् नहीं हो जाता।

अंतिम उत्तर:

सही विकल्प (C) साक्षर है।

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: आज मेरा बड़ा भाई आ गया।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: वाक्य की जाँच:

वाक्य: आज मेरा बड़ा भाई आ गया।

बड़े भाई के लिए हिन्दी में आदर का भाव रखा जाता है। आदर दिखाने के लिए एक व्यक्ति के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है।

चरण 2: नियम (आदरार्थ बहुवचन):

बड़े भाई, पिताजी, गुरुजी जैसे आदरणीय व्यक्तियों के लिए विशेषण और क्रिया बहुवचन में आते हैं। इसलिए 'मेरा' का 'मेरे', 'बड़ा' का 'बड़े' और 'आ गया' का 'आ गए' होगा।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:

आज मेरे बड़े भाई आ गए।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: आज मेरे बड़े भाई आ गए। (अशुद्धि: आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग नहीं हुआ।)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: मेरे को फल ले आओ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:

अशुद्ध वाक्य: मेरे को फल ले आओ।
इस वाक्य में 'मेरे को' प्रयोग गलत है।

चरण 2: अशुद्धि का कारण:

'मैं' सर्वनाम के साथ कारक चिह्न 'को' जुड़ने पर उसका रूप 'मुझे' हो जाता है, 'मेरे को' नहीं।

अतः यह कारक-प्रयोग की अशुद्धि है। यहाँ 'के लिए' का प्रयोग भी हो सकता है, तब रूप 'मेरे लिए' बनता है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:

मेरे लिए फल ले आओ।
अथवा: मुझे फल ला दो।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: मेरे लिए फल ले आओ। (सर्वनाम और कारक चिह्न के गलत मेल की अशुद्धि दूर की गई।)

11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: भारत उन्नतशील देश है।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:

अशुद्ध वाक्य: भारत उन्नतशील देश है।

अशुद्ध शब्द 'उन्नतशील' है।

चरण 2: अशुद्धि का कारण:

'शील' प्रत्यय जिस शब्द के अंत में जुड़ता है, वह भाववाचक संज्ञा रूप में आता है। यहाँ मूल शब्द 'उन्नति' है, 'उन्नत' नहीं।

इसलिए 'उन्नति + शील = उन्नतिशील' बनता है। जैसे प्रगति + शील = प्रगतिशील, विकास + शील = विकासशील।

यह वर्तनी और शब्द-रचना की अशुद्धि है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:

भारत उन्नतिशील देश है।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: भारत उन्नतिशील देश है। ('उन्नतशील' के स्थान पर 'उन्नतिशील' या 'विकासशील' लिखना उचित है।)

11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: मैं इस लड़के को पढ़ाया हूँ।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्ध वाक्य की पहचान:

अशुद्ध वाक्य: मैं इस लड़के को पढ़ाया हूँ।
यह वाक्य भूतकाल का है और 'पढ़ाना' सकर्मक क्रिया है।

चरण 2: अशुद्धि का कारण:

सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकाल में कर्ता के साथ 'ने' चिह्न लगता है और क्रिया कर्म के अनुसार चलती है।
यहाँ कर्ता 'मैं' के साथ 'ने' नहीं लगा है, इसलिए 'मैं' का रूप 'मैंने' होना चाहिए। कर्म 'लड़के को' के साथ 'को' होने से क्रिया पुल्लिङ्ग एकवचन 'है' में रहती है।
यह कारक और क्रिया-प्रयोग की अशुद्धि है।

चरण 3: शुद्ध वाक्य:

मैंने इस लड़के को पढ़ाया है।

अंतिम उत्तर:

शुद्ध वाक्य: मैंने इस लड़के को पढ़ाया है। (कर्ता के साथ 'ने' न लगने की अशुद्धि दूर की गई।)

12(a). 'करुण' अथवा 'हास्य' रस का परिभाषासहित उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का चुनाव:

प्रश्न में 'करुण' अथवा 'हास्य' में से एक रस लिखना है। यहाँ पहला रस 'करुण रस' लिखा गया है।

चरण 2: परिभाषा:

जब किसी प्रिय व्यक्ति के वियोग, मृत्यु या अनिष्ट के वर्णन से हृदय में शोक का भाव जागता है और वह विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों से पुष्ट होकर आनन्द की

अनुभूति कराता है, तब करुण रस होता है।
इसका स्थायी भाव 'शोक' है।

चरण 3: उदाहरण:

दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!
(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सरोज स्मृति)

चरण 4: रस-निरूपण:

स्थायी भाव: शोक।
आलम्बन: पुत्री सरोज की मृत्यु।
आश्रय: कवि स्वयं।
अनुभाव: अपने दुख को कहने की पीड़ा, आत्मग्लानि।
संचारी भाव: स्मृति, विषाद, दैन्य।
इन सबसे शोक भाव पुष्ट होता है, इसलिए यहाँ करुण रस है।

निष्कर्ष:

शोक स्थायी भाव वाला रस करुण रस है और ऊपर की पंक्तियाँ उसका उदाहरण हैं।

12(b). 'अनुप्रास' अथवा 'उत्प्रेक्षा' अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का चुनाव:

यहाँ दो अलंकारों में से पहला, 'अनुप्रास अलंकार', लक्षण और उदाहरण सहित लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:

जहाँ काव्य में एक ही वर्ण या वर्णों की आवृत्ति बार-बार होती है और उससे पंक्ति में

सुन्दरता तथा नाद-सौन्दर्य आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। यह शब्दालंकार है, क्योंकि इसका चमत्कार शब्द की ध्वनि पर टिका है।

चरण 3: उदाहरण:

चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल में।
(मैथिलीशरण गुप्त, पंचवटी)

चरण 4: स्पष्टीकरण:

इस पंक्ति में 'च' वर्ण की कई बार आवृत्ति हुई है: चारु, चंद्र, चंचल। इस बार-बार आने से पंक्ति में मधुर लय पैदा होती है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अंतिम उत्तर:

वर्णों की आवृत्ति से बना अलंकार अनुप्रास कहलाता है, जिसका ऊपर का पद उदाहरण है।

12(c). 'चौपाई' अथवा 'दोहा' छन्द का लक्षण और उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न का चुनाव:

यहाँ पहला छन्द, 'चौपाई', लक्षण और उदाहरण सहित लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:

चौपाई एक मात्रिक सम छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में जगण (ISI) और तगण (SSI) नहीं आते, प्रायः दो गुरु या दो लघु आते हैं।

चरण 3: उदाहरण:

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।

सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥
(तुलसीदास, रामचरितमानस)

चरण 4: मात्रा-गणना:

बंदउँ (4) + गुरु (2) + पद (2) + पदुम (3) + परागा (5) = 16 मात्राएँ।
सुरुचि (3) + सुबास (4) + सरस (3) + अनुरागा (6) = 16 मात्राएँ।
दोनों चरणों में 16-16 मात्राएँ हैं और अन्त में दो गुरु हैं, अतः यह चौपाई है।

अंतिम उत्तर:

प्रति चरण 16 मात्राओं वाला सममात्रिक छन्द चौपाई कहलाता है।

13. अपनी गली / मोहल्ले की नालियों की समुचित सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पत्र का प्रकार और रूपरेखा:

यह एक औपचारिक (कार्यालयी) पत्र है, जो नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को लिखा जाना है। इसमें ये बातें क्रम से आनी चाहिए: प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, तीन छोटे अनुच्छेदों में मुख्य बात, स्वनिर्देश और नाम।

चरण 2: पत्र:

प्रेषक:

क ख ग,

45, गांधी नगर,

कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दिनांक: 15 मार्च, 2026

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर निगम, कानपुर

विषय: मोहल्ले की नालियों की समुचित सफाई कराने हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

मैं गांधी नगर मोहल्ले का निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले की नालियों की दुर्दशा की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले एक माह से यहाँ की नालियों की सफाई नहीं हुई है। वे कूड़े और कीचड़ से भरकर जगह-जगह उफन रही हैं।

नालियों का गंदा पानी सड़कों और गलियों में फैल रहा है। इससे भयंकर दुर्गंध उठती है और मक्खी-मच्छर बहुत बढ़ गए हैं। मोहल्ले में मलेरिया, डेंगू और पेट की बीमारियाँ फैलने का खतरा है। कई बच्चे बीमार भी पड़ चुके हैं।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि सफाई कर्मचारियों को भेजकर हमारे मोहल्ले की नालियों की शीघ्र सफाई कराई जाए। साथ ही नालियों में कीटनाशक दवा और चूने का छिड़काव भी कराया जाए। इस कृपा के लिए मोहल्लेवासी आपके आभारी रहेंगे।

भवदीय,
क ख ग
गांधी नगर, कानपुर

निष्कर्ष:

ऊपर लिखा पत्र औपचारिक पत्र के सभी अंगों के साथ पूरा है। इसमें समस्या, उसका कारण और उसके परिणाम बताकर सफाई की माँग की गई है।

OR

बैंक के शाखा प्रबन्धक के नाम एक आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें किसी व्यवसाय को स्थापित करने हेतु ऋण की माँग की गई हो।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पत्र को समझें:

यह बैंक के शाखा प्रबन्धक को लिखा जाने वाला आवेदन पत्र है। इसमें व्यवसाय का नाम, उसके लिए आवश्यक राशि, ऋण चुकाने का तरीका और जमानत का उल्लेख होना चाहिए।

चरण 2: आवेदन पत्र:

प्रेषक:

क ख ग,

25, सुभाष नगर,

नगर: मधुपुर (उत्तर प्रदेश)।

दिनांक: 20 जनवरी, 2026

सेवा में,

शाखा प्रबन्धक महोदय,

स्टेट बैंक की मुख्य शाखा,

मधुपुर।

विषय: व्यवसाय स्थापित करने हेतु ऋण के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

मैं एक शिक्षित बेरोजगार युवक हूँ। मैं अपने नगर में कपड़ों की एक दुकान खोलना चाहता हूँ। इस कार्य के लिए मेरे पास केवल एक लाख रुपये की पूँजी है, जबकि इस व्यवसाय में कुल चार लाख रुपये की आवश्यकता होगी।

अतः मैं आपके बैंक से तीन लाख रुपये का ऋण चाहता हूँ। मैं यह ऋण आसान मासिक किस्तों में ब्याज सहित पाँच वर्ष के भीतर चुका दूँगा। बैंक की सभी शर्तें मुझे मान्य होंगी। जमानत के रूप में मैं अपने मकान के कागजात प्रस्तुत करने को तैयार हूँ।

मैंने व्यवसाय की पूरी योजना, पहचान पत्र, निवास प्रमाण पत्र और शैक्षिक प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ इस आवेदन के साथ संलग्न की हैं।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मेरा ऋण शीघ्र स्वीकृत करने की कृपा करें। इससे मुझे स्वरोजगार का अवसर मिलेगा।

भवदीय,
क ख ग

निष्कर्ष:

पत्र में व्यवसाय, ऋण की राशि, चुकाने की अवधि और जमानत, चारों मुख्य बातें दी गई हैं। यही ऋण आवेदन पत्र का सही रूप है।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
भारत में कृषि-क्रान्ति

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. कृषि-क्रान्ति का अर्थ और आरम्भ
3. क्रान्ति के प्रमुख साधन
4. उपलब्धियाँ
5. समस्याएँ

6. समाधान
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, भारत में कृषि-क्रान्ति:

प्रस्तावना:

भारत गाँवों का देश है और आज भी देश की बड़ी आबादी खेती पर निर्भर है। स्वतन्त्रता के समय हमारा देश अनाज के लिए विदेशों का मुँह देखता था। पुराने ढंग की खेती, वर्षा पर निर्भरता और कम उपज के कारण अकाल का भय बना रहता था। इस संकट से निकलने के लिए खेती के तरीकों में जो बड़ा बदलाव आया, उसे कृषि-क्रान्ति कहा जाता है।

कृषि-क्रान्ति का अर्थ और आरम्भ:

कृषि-क्रान्ति का अर्थ है खेती में आधुनिक विज्ञान और तकनीक का प्रयोग करके उत्पादन को कई गुना बढ़ा देना। सन् 1966-67 के आसपास देश में इसकी शुरुआत हुई, जिसे हरित क्रान्ति कहते हैं। इसमें कृषि-वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन का योगदान विशेष माना जाता है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश इसके मुख्य क्षेत्र रहे।

क्रान्ति के प्रमुख साधन:

इस क्रान्ति की नींव कई बातों पर टिकी थी। अधिक उपज देने वाले उन्नत बीज, रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाएँ किसानों को उपलब्ध कराई गईं। सिंचाई के लिए नहरें, नलकूप और बाँध बनाए गए। ट्रैक्टर, थ्रेशर और हार्वेस्टर जैसे यंत्रों से खेती का काम आसान और तेज हो गया। सरकार ने किसानों को सस्ता ऋण, फसल का समर्थन मूल्य और भण्डारण की सुविधा भी दी।

उपलब्धियाँ:

कृषि-क्रान्ति से गेहूँ और चावल का उत्पादन बहुत बढ़ा। स्वतन्त्रता के समय अनाज का उत्पादन लगभग 5 करोड़ टन था, जो आज 30 करोड़ टन से अधिक हो चुका है। भारत अनाज का आयात करने वाला देश न रहकर निर्यात भी करने लगा। किसानों की आय बढ़ी, गाँवों में रोजगार के अवसर मिले और जीवन-स्तर सुधरा। दूध के क्षेत्र में श्वेत क्रान्ति ने भी पशुपालकों को सहारा दिया।

समस्याएँ:

इस क्रान्ति के कुछ दुष्परिणाम भी सामने आए। रासायनिक खाद के अधिक प्रयोग से भूमि की उर्वरता घटी और भूजल नीचे चला गया। इसका लाभ बड़े किसानों को अधिक मिला, जबकि छोटे किसान पीछे रह गए। आज भी बहुत-से खेत केवल मानसून के भरोसे हैं।

समाधान:

इन समस्याओं के लिए जैविक खेती, ड्रिप और स्प्रींकलर सिंचाई, मिट्टी की जाँच, फसल बीमा और किसानों के प्रशिक्षण पर ध्यान देना होगा। दलहन और तिलहन की खेती को भी बढ़ावा देना चाहिए।

उपसंहार:

कृषि-क्रान्ति ने भारत को भूख के भय से मुक्त किया और आत्मनिर्भरता की राह दिखाई। अब आवश्यकता है कि विज्ञान और परम्परा का संतुलन बनाकर धरती की सेहत भी बचाई जाए। तभी हमारा अन्नदाता सुखी रहेगा और देश सच्चे अर्थों में समृद्ध होगा।

निष्कर्ष:

खेती का विकास ही देश के विकास की जड़ है, इसलिए कृषि-क्रान्ति को टिकाऊ रूप देना हम सबका दायित्व है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्व

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना

2. अनुशासन का अर्थ
3. विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्व
4. अनुशासनहीनता के कारण
5. अनुशासन कैसे आए
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्व:

प्रस्तावना:

जीवन की हर सफलता के पीछे कोई न कोई नियम काम करता है। सूर्य समय पर उगता है, ऋतुएँ क्रम से आती हैं और नदियाँ अपने मार्ग पर बहती हैं। यही प्रकृति का अनुशासन है। मनुष्य भी यदि नियमों में बँधकर चले तो उसका जीवन सुन्दर और सफल बन जाता है। विद्यार्थी-जीवन तो भविष्य की नींव है, इसलिए इस काल में अनुशासन सबसे आवश्यक है।

अनुशासन का अर्थ:

अनुशासन शब्द अनु और शासन से बना है, जिसका अर्थ है नियमों के अनुसार चलना। अपने बड़ों की आज्ञा मानना, समय का पालन करना, विद्यालय के नियमों को अपनाना और स्वयं पर नियन्त्रण रखना, ये सब अनुशासन के रूप हैं। सच्चा अनुशासन डर से नहीं, समझ और आदत से आता है।

विद्यार्थी-जीवन में महत्व:

विद्यार्थी-काल में जो आदतें बन जाती हैं, वे जीवन भर साथ रहती हैं। समय पर पढ़ना, नियमित अभ्यास और नियमित दिनचर्या से पढ़ाई में सफलता मिलती है। अनुशासित विद्यार्थी अपने शिक्षकों और माता-पिता का प्रिय होता है। उसमें विनम्रता, सहनशीलता और आत्मविश्वास बढ़ता है। कहा भी गया है, विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्। विनय अनुशासन से ही आती है। महात्मा गाँधी और डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसे महापुरुषों ने अपने नियमित और संयमित जीवन से ही ऊँचाई पाई।

अनुशासनहीनता के कारण:

आज अनुशासनहीनता बढ़ती दिखाई देती है। इसके कारण हैं घर में संस्कारों की

कमी, दोषपूर्ण शिक्षा-पद्धति, मोबाइल और टेलीविजन का अनुचित प्रयोग, बुरी संगति और परीक्षा का अत्यधिक दबाव। कई बार बड़े स्वयं अच्छा उदाहरण नहीं रखते, तब बच्चे भी वैसा ही सीखते हैं।

अनुशासन कैसे आए:

माता-पिता और शिक्षक पहले स्वयं आदर्श बनें। विद्यालयों में खेलकूद, एन.सी.सी., स्काउट और सांस्कृतिक गतिविधियाँ कराई जाएँ। विद्यार्थी दिनचर्या बनाकर उसका पालन करें और मोबाइल का सीमित प्रयोग करें। प्रेम और समझ के साथ दिया गया दण्ड भी अनुशासन सिखाता है।

उपसंहार:

अनुशासन सफलता की पहली सीढ़ी है। जो विद्यार्थी आज नियमों को अपनाएगा, वही कल देश का जिम्मेदार नागरिक बनेगा। इसलिए हर विद्यार्थी को अनुशासन को बोझ नहीं, अपना सबसे बड़ा साथी समझना चाहिए।

निष्कर्ष:

अनुशासित विद्यार्थी ही सुयोग्य नागरिक और उज्ज्वल भविष्य का निर्माता बनता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
साहित्य समाज का दर्पण है!

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. साहित्य का अर्थ
3. साहित्य और समाज का सम्बन्ध
4. विभिन्न कालों के साहित्य में समाज की झलक
5. साहित्य का समाज पर प्रभाव

6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, साहित्य समाज का दर्पण है:

प्रस्तावना:

दर्पण में हमें अपना असली रूप दिखाई देता है। ठीक उसी प्रकार साहित्य में किसी युग के समाज का रूप, उसके सुख-दुःख, विचार और रीति-रिवाज साफ दिखाई देते हैं। इसीलिए कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्यकार समाज में रहकर ही अपनी रचना करता है और जो देखता-सुनता और अनुभव करता है, उसे शब्दों में ढाल देता है।

साहित्य का अर्थ:

साहित्य शब्द का अर्थ है सहित का भाव, अर्थात् शब्द और अर्थ का मेल तथा जिसमें समाज का हित छिपा हो। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबन्ध सब साहित्य के रूप हैं। ये केवल मनोरंजन नहीं करते, बल्कि जीवन को समझने की दृष्टि भी देते हैं।

साहित्य और समाज का सम्बन्ध:

साहित्य और समाज एक-दूसरे पर निर्भर हैं। समाज साहित्य को विषय देता है और साहित्य समाज को विचार देता है। जब समाज बदलता है तो साहित्य की भाषा, भाव और शैली भी बदल जाती है। इसलिए किसी काल का साहित्य पढ़कर हम उस काल की परिस्थितियों को जान सकते हैं।

विभिन्न कालों के साहित्य में समाज की झलक:

वीरगाथा काल के साहित्य में युद्ध और वीरता का वातावरण मिलता है। भक्तिकाल में जब समाज जाति-पाँति और आडम्बर से पीड़ित था, तब कबीर ने पाखण्ड पर चोट की और तुलसीदास ने रामचरितमानस में आदर्श परिवार और आदर्श राज्य की कल्पना की। रीतिकाल के साहित्य में दरबारी विलासिता और शृंगार की प्रधानता दिखती है। आधुनिक काल में स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती ने देशप्रेम जगाया। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों और कहानियों में किसान, मजदूर और गरीब की दशा का सजीव चित्रण किया।

साहित्य का समाज पर प्रभाव:

साहित्य केवल दर्पण ही नहीं, दीपक भी है। वह समाज की बुराइयाँ दिखाकर उन्हें दूर करने की प्रेरणा देता है। स्वतन्त्रता संग्राम में कवियों और लेखकों की रचनाओं ने लोगों में साहस भरा। सामाजिक सुधार, नारी-सम्मान और मानवता की भावना फैलाने में भी साहित्य की बड़ी भूमिका रही है।

उपसंहार:

साहित्य समाज का सच्चा प्रतिबिम्ब है। जो साहित्य समाज के यथार्थ को दिखाकर उसे सही राह दिखाए, वही श्रेष्ठ माना जाता है। इसलिए साहित्यकार का दायित्व है कि वह समाज को सही दिशा दे और पाठक का कर्तव्य है कि वह अच्छे साहित्य को पढ़े और अपनाए।

निष्कर्ष:

साहित्य और समाज का सम्बन्ध अटूट है, साहित्य समाज को दिखाता भी है और सँवारता भी है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
भारतीय लोकतन्त्र का भविष्य

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. लोकतन्त्र की अब तक की उपलब्धियाँ
3. वर्तमान चुनौतियाँ
4. उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ
5. सुधार के आवश्यक उपाय
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध, भारतीय लोकतन्त्र का भविष्य:

प्रस्तावना

लोकतन्त्र वह शासन-प्रणाली है जिसमें सत्ता की वास्तविक शक्ति जनता के हाथ में रहती है। अब्राहम लिंकन के शब्दों में यह जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन है। भारत ने 26 जनवरी 1950 को अपना संविधान लागू करके स्वयं को सम्प्रभु, लोकतान्त्रिक गणराज्य घोषित किया। आज यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। स्वतन्त्रता के बाद इसने अनेक कठिन परीक्षाएँ पार की हैं, इसलिए स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि आने वाले समय में इसका स्वरूप कैसा होगा।

अब तक की उपलब्धियाँ

हमारे देश में नियमित अन्तराल पर स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव होते हैं। सत्ता का परिवर्तन शान्तिपूर्ण ढंग से होता है। संविधान ने नागरिकों को मौलिक अधिकार दिए हैं और न्यायपालिका उनकी रक्षा करती है। पंचायती राज ने शासन को गाँव तक पहुँचाया है। सूचना का अधिकार कानून, 2005 ने प्रशासन को जवाबदेह बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। पड़ोसी देशों की तुलना में हमारी लोकतान्त्रिक जड़ें अधिक मजबूत सिद्ध हुई हैं।

वर्तमान चुनौतियाँ

फिर भी कई समस्याएँ लोकतन्त्र को कमजोर करती हैं। भ्रष्टाचार, राजनीति का अपराधीकरण, धन-बल का प्रयोग, जातिवाद और साम्प्रदायिकता सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। निरक्षरता के कारण कई मतदाता सोच-समझकर मत नहीं दे पाते। बहुत से शिक्षित लोग मतदान के प्रति उदासीन रहते हैं। संसद और विधानसभाओं में बार-बार होने वाले व्यवधान तथा दल-बदल भी जनता का विश्वास घटाते हैं।

उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ

इन चुनौतियों के बावजूद भविष्य आशाजनक है। शिक्षा का निरन्तर प्रसार हो रहा है और देश की बड़ी आबादी युवा है, जो जागरूक होकर प्रश्न पूछ रही है। डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया ने सूचना को सबके हाथ में पहुँचा दिया है। इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीन से चुनाव अधिक सरल और तेज हुए हैं। महिलाओं और वंचित वर्गों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ रही है। यदि यही गति बनी रही तो लोकतन्त्र और गहरा होगा।

सुधार के उपाय

चुनाव-प्रणाली में सुधार करके धन और बाहुबल का प्रभाव रोकना होगा। स्वच्छ छवि वाले उम्मीदवारों को आगे लाना चाहिए। न्याय शीघ्र मिले और मीडिया निष्पक्ष रहे। सबसे जरूरी है कि प्रत्येक नागरिक अपने मत का महत्व समझे और अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी पालन करे।

उपसंहार

भारतीय लोकतन्त्र की नींव मजबूत है, पर उसे सजग नागरिकों की निरन्तर देखभाल चाहिए। यदि हम जागरूक रहें और ईमानदारी से अपना दायित्व निभाएँ, तो हमारा लोकतन्त्र न केवल सुरक्षित रहेगा, बल्कि दुनिया के लिए आदर्श भी बनेगा।

निष्कर्ष:

निबन्ध में प्रस्तावना, उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ, सम्भावनाएँ, सुधार और उपसंहार का क्रम रखने से 9 अंकों का पूर्ण उत्तर बनता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए:
पर्यावरण-संरक्षण की आवश्यकता

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. पर्यावरण बिगड़ने के कारण
3. बिगड़ते पर्यावरण के दुष्परिणाम
4. संरक्षण के उपाय
5. सरकार और समाज की भूमिका
6. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

हमारे चारों ओर की हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे और जीव-जन्तु मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। 'परि' का अर्थ है चारों ओर और 'आवरण' का अर्थ है ढकने वाला। यही आवरण हमारे जीवन का आधार है। आज औद्योगिक विकास की दौड़ में मनुष्य ने इसी आधार को कमजोर कर दिया है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण आज सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।

पर्यावरण बिगड़ने के कारण

जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, इसलिए भोजन, आवास और ईंधन की माँग भी बढ़ी है। इसे पूरा करने के लिए जंगल काटे जा रहे हैं। कारखानों का धुआँ हवा को जहरीला बनाता है और उनका गंदा पानी नदियों में बहाया जाता है। वाहनों की बढ़ती संख्या से शहरों की हवा साँस लेने योग्य नहीं रही। प्लास्टिक का कचरा मिट्टी और जल दोनों को खराब करता है।

बिगड़ते पर्यावरण के दुष्परिणाम

प्रदूषित हवा से दमा, फेफड़ों के रोग और आँखों की बीमारियाँ बढ़ती हैं। दूषित जल से हैजा, पीलिया और टाइफाइड फैलता है। ग्रीनहाउस गैसों और ओजोन परत के क्षरण से धरती का तापमान बढ़ रहा है। इससे ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जल-स्तर उठ रहा है और बाढ़, सूखा जैसी आपदाएँ बार-बार आ रही हैं। अनेक पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ समाप्त होने के कगार पर हैं।

संरक्षण के उपाय

सबसे पहला उपाय वृक्षारोपण है, क्योंकि पेड़ हवा को शुद्ध करते हैं और वर्षा में सहायक होते हैं। कारखानों में धुएँ और गंदे पानी को साफ करने के संयन्त्र अनिवार्य होने चाहिए। सार्वजनिक परिवहन और साइकिल को बढ़ावा देना चाहिए। सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ स्रोत अपनाने चाहिए। प्लास्टिक का प्रयोग घटाकर कपड़े या जूट के थैले काम में लाने चाहिए। वर्षा-जल का संचय और जल का सोच-समझकर उपयोग भी जरूरी है।

सरकार और समाज की भूमिका

सरकार ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, वन संरक्षण कानून और राष्ट्रीय हरित अधिकरण जैसी व्यवस्थाएँ की हैं। स्वच्छ भारत अभियान भी इसी दिशा में एक कदम है। परन्तु केवल कानून से काम नहीं चलता। जब तक हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेगा, तब तक सुधार सम्भव नहीं। विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा और विश्व

पर्यावरण दिवस (5 जून) जैसे आयोजन लोगों को जागरूक करते हैं।

उपसंहार

पर्यावरण हमें विरासत में नहीं मिला, हमने इसे आने वाली पीढ़ियों से उधार लिया है। यदि हमने आज इसे नहीं सँभाला, तो भविष्य अंधकारमय होगा। हमें पेड़ लगाने, जल बचाने और कचरा कम करने का संकल्प लेना चाहिए। स्वच्छ पर्यावरण ही स्वस्थ जीवन और सुरक्षित भविष्य का आधार है।

निष्कर्ष:

पर्यावरण की रक्षा हम सबका कर्तव्य है। पेड़ लगाकर, जल बचाकर और प्रदूषण घटाकर ही पृथ्वी को जीवन के योग्य रखा जा सकता है।